" ऊँ गंग गणपतये नमः "

साधना संगम · प्रभात



मंगलमय गिरिजा सुवन प्रणवहुं बारम्बार
विघ्न हरण मंगल करन करो भवसागर पार

लेखक-
इन्द्रपाल राणा

प्रकाशन वर्षः २०७६

मूल्यः ५०० रु०

प्रकाशनः सृष्टि प्रकाशन

प्रकाशकः इन्द्रपाल राना

विषय व्यवस्था

ऋणभार दर्शन

①



श्री [illegible]

[illegible] गाजीपुर(उ०प्र०)

मो०- [illegible]

पिता होकर भी जिन्होंने आज के अन्ध अर्थप्रधान युग की विषमता विवशता में मुझे तंत्र-मंत्र प्रयोग की ओर निर्बाध अग्रसर होने में सहायता किया उनके इस त्याग को न विस्मृत कर सकूँगाँ न उनके अर्थ स्त्रोत की भरपाई ।

②



श्री अरुण कुमार मिश्र(संस्कृत प्रवक्ता)

श्री [illegible] गाजीपुर(उ०प्र०)

मो०- [illegible]

गुरु एक बड़े भाई एक सहयोगी एक मित्र के रुप में ब्राह्मणवाद को एक कोने में रखकर जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ व मूल्य के मेरा पुस्तकीय ज्ञानवर्धन व दुर्लभ साहित्य उपलब्ध कराया उनका भार सदैव स्मृति में रहेगा ।

आभार दर्शन

①



पं० अश्वनी कुमार मिश्रा(प्र०अ० एवं N.P.R.C.)
प्रा०वि०बवाड़ा डेरा रेवतीपुर,गाजीपुर(उ०प्र०)
मो०-9451782647

व्याधि की दशा में जिनके परामर्श के प्रकाश से व्याधि मुक्त होकर इस पुस्तक को लिख सका उनका मैं आजीवन हृदय से आभारी रहूँगा ।

②



श्री जनमेजय राय (स०अ०)
उ०प्रा०वि०डारीडीह,रेवतीपुर-गाजीपुर(उ०प्र०)
मो०-7376482024

अर्थ रुपी महासागर में डूबता निकलता मैं जिनकी सहायता से किनारे लगकर इस तंत्र को पुस्तक रुप में बना सका उनका आभार प्रकट करना मेरे लिये सम्भव नहीं है।

सहयोग दर्शन

(१)



श्री जयप्रकाश सिंह(प्र०अ०)
उ०प्रा०वि०भिखी चौरा
क्षेत्र-रेवतीपुर,गाजीपुर (उ०प्र०)
मो०-9648296031

(२)



श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव(प्र०प्र०अ०)
उ०प्रा०वि०भिखी चौरा
क्षेत्र-रेवतीपुर,गाजीपुर (उ०प्र०)
मो०-8808646015

सहयोग दर्शन

३



श्री कन्हैया सिंह(स०अ०)
उ०प्रा०वि०भिख्खी चौरा
क्षेत्र-रेवतीपुर,गाजीपुर (उ०प्र०)
मो०-8382042931

४



श्री राजकुमार सिंह (स०अ०)
प्रा०वि०भिख्खी चौरा
क्षेत्र-रेवतीपुर,गाजीपुर (उ०प्र०)
मो०-9454620795

सहयोग दर्शन

(५)



श्रीमती बिन्दुमती पाण्डेय
प्रा०वि०मिरखी चौरा
क्षेत्र-रेवतीपुर,गाजीपुर (उ०प्र०)
मो०-8953497398

स्वयं विभागीय उष्णता को अपने ऊपर झेलते हुए जिन्होंने मुझे समय की गंगा में शीतलता का स्नान कराया ऐसे उदार हृदय अध्यापक बन्धुओं को विस्मृत कर इनके सहयोग को कलंकित करना मेरे लिये मृत्यु तुल्य कष्ट के समान है।

स्नेह दर्शन

(१)



आशीष राय
कन्यरापुर,आजमगढ़
मो०-9685090284

(२)



अच्छेलाल यादव
रायपुर छोटना-गाजीपुर
मो०-8808648478

३



नवीन सिंह
महराजगंज,आजमगढ़
मो०-9156142024

४



आशुतोष गिरी
लालगंज,आजमगढ़
मो०-9956961652

५



डा०.लालजी
बेलहरा,झोटना-गाजीपुर
मो०-9984229897

६



अरविन्द यादव(स०अ०)
दाथा,उचहुँआं-आजमगढ़
मो०-8542890230

तंत्र सामग्री एकत्र कर तो किसी ने शान्त्रोक्त वनस्पति पूजन सामग्री,धन,समय,श्रम,पुस्तक आदि स्थानादिक व्यवस्था देकर पुस्तक लेखन व साधना मार्ग को निष्कंटक बनाया जिस पर चलकर मैं इस पुस्तक को आप तक पहुचा सका उन सभी छोटे भाईयों को स्नेह प्रदान करता हूँ कि उनका जीवन मंगल दीप की तरह प्रज्वलित रहें।

(७)



किरन यादव
ढोटना,गाजीपुर(उ0प्र0)
पिन-275203

पारिवारिक कठिनाइयों विषमताओं व जिम्मेदारी को निर्वाह करते हुये जिन्होंने मेरे तन्त्रात्मक अनुष्ठान की सम्पूर्ण व्यवस्था तथा रात्रि अनुष्ठानिक काल में जागकर मेरे स्वास्थ्य व साधना का अवलोकन किया इनके इस अविस्मरणीय कार्य के लिये विशेष स्नेह प्रदान करता हूँ साथ में महाकाल शिव

से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि वे (महाकाल) इनके व इनके परिवार पर अमृतमयी कृपा दृष्टि की वर्षा करतें रहें।

उत्साहवर्धन

(१)



श्री पखण्डी कनौजिया(कन्नौज वाले)
झोटना,गाजीपुर(उ०प्र०),पिन-275203
मो0-7618998640(शिव समिति के अग्रणी सदस्य)

परिवार के भरण पोषण व व्यापार व्यवसाय के व्यस्त समय में भी कुछ समय निकालकर निःस्वार्थ भाव से जिन्होंने मेरे द्वारा लिखी गई पुस्तक के प्रत्येक शब्दों का सूक्ष्मता पूर्वक निरीक्षण किया और इसको छापने के लिये प्रेरित किया। उनके इस सराहनीय कार्य को शब्दों में व्यक्त करना शब्दों का ही अपमान हैं।

②



सर्वानन्द चौबे
घुमक्कड़ अघोराचार्य
मो०-9120842661

हमारे गाँव झोटना(इन्द्रपुर) के अति प्राचीन शिव मन्दिर के अधिष्ठाता सदाशिव, श्री गणेश,श्री हनुमान और उनके परिवार व मन्दिर के पुजारी अति क्रोधी,कठोर हृदयी,उग्र श्री हनुमान के परम भक्त सिद्ध तांत्रिक अघोरी सर्वानन्द का भी मैं हृदय से वन्दन अभिनन्दन करता हूँ साथ में ऐसी कामना करता हूँ कि वे मुझ पर तथा मेरे गाँव पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें।

③



श्री शिवकर्ण यादव(रे०पे०)
रेलवे कालोनी गाजीपुर सिटी,गाजीपुर
मो०-9984760946

जिनके घर पर रहकर मैंने लम्बे समय तक तांत्रिक साधना की और इसके बदले उन्होंने कुछ भी नहीं लिया ऐसे महापुरुष को शत्-शत् नमन ।



मूल लेखक-
इन्द्रपाल राणा (स०अ०)
ग्राम व पो०-झोरना,जनपद-गाजीपुर(उ०प्र०)
पिन-275203

सावधान

पुस्तक का कुछ अंश शास्त्रोक्त ग्रंन्थों,प्रकाशित पुस्तकों पर आधारित है । तो कुछ ब्रह्म प्रेत,सैयद बीर (पीर),नागमती,श्मशान प्रेत,पितरों के कृपा पर । जिन्होंने पुस्तक लेखन में अपनी दृष्टि रखी है।बिना लेखक के अनुमति के इसके प्रयोग करने पर आपका................?

इसलिए ध्यान रखें ।

आगे आप स्वतंत्र हैं। अच्छा-बुरा आपके हाथ में है। मैं तो माध्यम मात्र हूँ आपका





कृति समर्पण

पन्द्रह नवम्बर सन् अठहत्तर को जब भगवान भास्कर ने प्रथम बार अपने नेत्र खोले उसी समय ग्राम-बोझवां(झोटना) के छोटे से भग्न गृह में दारुण कष्ट का सामना कर रहे एक अध्यापक(शिक्षक) के यहाँ मैं तुझे खोजने आया उस समय तुम मेरे ही साथ थी पर मैं तुम्हे देख नहीं

पाया । समय का चक्र चलता रहा मैं भी समय का थपेड़ा खाता रहा कष्ट पर कष्ट भोगता रहा । कष्ट से इतना जर्जर हो गया कि तेरा नाम व पता ही विस्मृत हो गया परन्तु तुम मुझे स्मृत करती रहीं मेरे बारे में सोचती रही परन्तु आमना सामना नहीं हो पाया । आयु के अगले पड़ाव पर सांसारिक कामनाओं में खोता रहा तुम अपना आभास दिलाती रही। पढ़ा लिखा जीवन रहस्य को समझा,लोग मिले दुनियादारी मिली,अच्छे,बुरे,भले मिले । मैं दुनिया के कामों में फसा दुनियादारी के लिये प्रयास पर प्रयास करता रहा और तू विरोध पर विरोध,कभी तुम विजयी रही तो कभी मैं । लुका छिपी का खेल चलता रहा तुम्हारी मौन स्वीकृति से मैं मायावी दुनिया में कुछ समय के लिये खो गया । जब बाहर निकलकर देखा तो तुम नही थी । मैं बेबस लाचार तेरा इन्तजार करने लगा । समय पर समय जाता रहा गरीबी में जीवन रहा अभाव में रहा,संकट में रहा पर तेरा पता नहीं रहा । जब तुम्हारी दया(अदृश्य) दृष्टि से अध्यापक (शिक्षक) हुआ तब तेरे सामीप्य का अभाव महसूस किया तुझे प्राप्त करने का प्रयास भी किया पर शिथिलता का सहयोगी होने के कारण तेरा पता नहीं कर पाया । पुनः समय का विपरीत चक्र चला परिवार,समाज,आदि के कटु शब्दों

का श्रवण किया शत्रु, मित्र रुपी शत्रु, रोग रुपी शत्रु,कर्ज रुपी शत्रुओं का शिकार हुआ न जाने मेरे साथ क्या क्या हुआ पर तू सामने नहीं आई पर अदृश्य रुप से मेरा मार्गदर्शन करती रही । यश अपयश,सम्मान अपमान,दुःख सुख,आये गये पर पता नहीं तेरी क्या समस्या थी कि तू अपने पूर्ण स्वरुप में सामने नहीं आई । तुझे जानने के लिये मैंने त्रिकाल की कठिन से कठिन साधना की स्वप्न विधान देखा पर तुम रुप बदलकर आई इसलिये पहचान नहीं पाया । कुण्डलिनी जागरण,अप्सरा,यक्षिणी,नायिका आदि में भी तू मृगमरीचिका ही रही । मैं कुछ समय के लिये थक हार कर विश्राम करने लगा पर एक दिन तू श्मशान घाट पर दिखी तुझे पाने के लिये मैं वहाँ पर जाने लगा लम्बे समय तक जाता रहा पर मैं वहाँ तुझे दुबारा न देख पाया । क्रोध की अवस्था में जलती चिता में रक्त बूंद भी आहूत किया पर न जाने तू कितना कठोर हृदया हो कि कोई प्रतिक्रिया नहीं की । तुझको पराया जानकर मैंने तेरे बारे में चिन्तन ही छोड़ दिया । शायद मेरी गलती थी कि भूल वश मैंने तुझे अपना समझ लिया । तुझे भुलाकर मैंने अपना नया जीवन शुरु कर दिया, पर तुम्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और लम्बे अन्तराल के बाद आई तो लो स्वीकार करो यह कृति जो मैंने तेरी स्मृति में लिखा है स्वीकार करो स्वीकार करोगी न ?

आत्म निवेदन व क्षमा

यह पुस्तक किसी भी प्रकार धनार्जन व्यवसाय आदि से सम्पर्क नही रखती है,मात्र अपने देश,विज्ञान संस्कृति,अध्यात्म,गुरुओं सहयोगियों के आभार का दर्शन करवाती है । इसके प्रयोग,विचार,सुझाव आदि में असत्य का संयोग नहीं है । पाठक पढ़े विचार करें पर कामनाओं के भँवरजाल में फसे मनु सतरुपा के प्रिय लाडले त्राण पाने के लिये मुझे व्यक्तिगत रुप से माध्यम न बनाये नही तो उनका कोध व्यर्थ में उनका ही नुकसान करेगा, आध्यात्मिक सहयोग सुझाव के लिये मार्ग सदैव खुला रहेगा अपनी पात्रता का पूर्ण प्रयोग करे,बेसब्री से स्वागत रहेगा।

आपका

ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः

हे परमपिता परमेश्वर मैं कुछ लिखना चाहता हूँ लिखू न लिखू,क्या लिखू समझ नही पा रहा हूँ । लिखू तो कैसे लिखू क्योंकि ये हाथ कभी तेरी दया दृष्टि पर आश्रित थे असहाय थे पर आज ये तेरी कृपा दृष्टि से इतने सबल हो गये हैं कि कुछ भी कर सकते हैं कुछ भी लिख सकते हैं। तूने इसमें जो शक्ति दी है उससे मैं लिखूगां तो पता नहीं तू क्या सोचेगा मुझे डर है कि तू कहीं कुछ गलत न सोच बैठे कि तूने जिसे लिखने की इतनी शक्ति दी वह इतना निर्दयी व क्रूर हो जायेगा कि तेरे बनायें गये षटकर्म विधान के बारे में ही लिखना शुरु कर देगा । तेरे ही मर्यादा को नीलाम करने लगेगा । मैं स्वयं भी इतना निर्लज्ज हो गया कि इस जीवन के सारे कुकृत्यों को करने के बाद तुझे ही निर्वस्त्र करने लगा । तेरे बनाये नियमों को ताख पर रखकर मैं षटकर्मो की ओर अग्रसर हो गया कब और कैसे पता नहीं चला । जब चेता तो पाया कि मै बहुत आगे बढ़ गया जब लेखनी ने विराम करने का प्रयास किया तो पाया कि उसने तेरी बनायी नियम संहिता का कब का उल्लंघन कर लिया है। कैसे तेरी नजरों में अपराधी बनकर मैने

वशीकरण जैसे सुकृत्य को कुकृत्य में परिवर्तित कर दिया। पर मैनें कांपते हाथों से डरते हुए इस विधान को प्रकाशित कर दिया। पाठक इस प्रयोग को अपनाकर मुझे अपराधयुक्त करेगें या अपराधमुक्त पता नहीं ? सिर्फ तू जानता है सिर्फ तू।

वशीकरण के अद्भुत प्रयोग(कामाख्या यन्त्र तंत्र मंत्र)

यहाँ जो प्रयोग दिया जा रहा है वह कई बार प्रयोग में सफलता पूर्वक लाया जा चुका है। आप यदि सही कार्य के लिये प्रयोग करेगें तो सफलता निश्चित रुप से मिलेगी। गलत कार्य करने में भी सफलता मिलेगी क्योकिं यंत्र मंत्र की अपनी शक्ति व मर्यादा है। पर कार्य होने के बाद दण्डित होना उससे ज्यादा कष्टमय जीवन यापन करना बुद्धिमानी नहीं कहा जा सकता जैसे कालनेमि,रावण और राहू के साथ हुआ था। इसलिये पुनः अपनी पात्रता पर विचार कर लें।

पूजन

गुरु या शिव को जगतगुरु मानकर प्रार्थना करें कि आप ही सर्वविद्या के ज्ञाता है। आपकी शरण में आकर हम यह प्रयोग इस निमित्त कर रहें हैं। फिर उनकी यथा शक्ति पूजा करें। गणपति,इष्टदेव,कुलदेव,स्थानदेव आदि से आज्ञा व आशीर्वाद लें उनसे अपनी कामना व्यक्त करें और सामान्य पूजन करें।

विचार प्रकरण

मैंने इस विद्या को जीवन में दो बार आजमाया है। वशीकरण जिस पर किया जा रहा था ठीक आठवें दिन ही मुलाकात व बात हो गई थी। सामान्यतः यह आठ दिन में ही परिणाम दे देता है पर परिस्थित वश घटाया या बढ़ाया जा सकता है। मात्रा व समय अपने प्रयोजन के अनुसार निर्धारित करना चाहिये।यह प्रयोग पति पत्नी,प्रेमी प्रेमिका,या किसी भी स्त्री के वशीकरण के लिये उपयोगी है। बिना किसी सन्देह के प्रयोग किया जा सकता है सफलतादायक है। साध्य के मुलाकात न होने की स्थिति में कुछ समय लग सकता है पर दोनों लोग मिलते जुलते रहेंगे तो परिणाम अतिशीघ्र

आ जायेगा।अमेरिका में बैठी किसी स्त्री के वशीकरण करने की भावना मूर्खता पूर्ण है।सामाजिक व व्यावहारिक मर्यादाओं का ध्यान रखना शास्त्र सम्मत है। प्रयोगकर्ता स्वतंत्र है पर ध्यान रहे हर कार्य का परिणाम व प्रभाव सुनिश्चित है चाहे क्षेत्र जो भी हो। चाहे देव हो दानव हो या अन्य कोई । इसलिये अपने कामनाओं के बारे में आश्वस्त हो जायें।

यंत्र विधान

नीचे दो यंत्र दिया जा रहा है। दोनों ही अद्भुत है जो चाहे प्रयोग करें अगर इच्छा है तो मंत्र का प्रयोग भी करें नहीं तो यंत्र ही पर्याप्त है। उसमें भी एक ही यंत्र। मंत्र की मात्रा आप अपनी स्वेच्छा से या कार्य की आवश्यक्ता से निर्धारित कर लें। पहले इन दोनों यंत्र या जो भी यंत्र चाहें,को शुभ मुहुर्त में सफेद कागज या भोजपत्र या श्वेत वस्त्र पर पर्याप्त मात्रा में बनाकर रख लें या रोज बनाते रहें। लेखनी के रुप में पीला या लाल स्केच या डाट पेन का प्रयोग करें या अष्टगंध की स्याही में इत्र मिलाकर अनार की कलम से लिखें आप मुक्त है ।

ॐ कामाख्या यंत्र

ॐ

यंत्र-१

नाम	वं	१४	माता
३	२	१	५
८	१३	७	३
३	६	२१	१५

ॐ

नाम के जगह उस स्त्री का नाम लिखा जायेगा जिसका वशीकरण करना है।माता के जगह उसी के माता का नाम लिखा जायेगा तथा पीछे यंत्र के उसका पूरा पता लिखा जायेगा। उसका चित्र उपलब्ध है तो सामने रखें नहीं तो मानसिक कल्पना कर लें या एक काल्पनिक चित्र बना लें।

यंत्र-२ ५५१५१७१२१ $\frac{\text{स्त्री का नाम}}{\text{माता का नाम}}$ ७५५५५१२१७१

पीछे पूरा पता लिखें।

जब यंत्र बनकर तैयार हो जाये तो उसको रुई की बत्ती में लपेटकर दीपक में जलाने योग्य कर लें। दीपक में यंत्र और रुई बत्ती दोनों ही जलेगें। यदि कपड़े पर लिखें हैं तो उसको दीपक के बत्ती की तरह बना लें फिर एक मिट्टी का दीपक छोटा या बड़ा जैसी इच्छा हो तेल या घी डालकर उसमें बत्ती लगा दें अगर मंत्र भी साथ में जाप करना है तो कड़वा तेल अनिवार्य है नहीं तो कोई भी चलेगा। दीपक के नीचे अक्षतः या जौ रख दें अगर सुविधा हो तो चौका भी नीचे बना दें या ऊँ या स्वास्तिक का चिन्ह बना दें उस पर दीपक रखें। उसका अक्षतः,पुष्प,गुगुल,धूप,अगरबत्ती,हल्दी,रोरी,अष्टगंध से पूजन करें। सिन्दूर की ७ बिंदी दीपक पर लगायें अगर सम्भव हो तो दीपक पर एक पुष्पमाला अर्पित कर दें दीपक के पास कुछ द्रव्य दक्षिणा रख दें भोग के लिये एक प्लेट में बर्फी,पेड़ा,गरी,बताशा आदि भी रखें और दीपक से मनोकामना व्यक्त करते हुये प्रज्वलित करें। आपकी कामना अवश्य पूरी हो जायेगी। ऊपर जो यंत्र हैं वह कई जगह कई विद्वानों द्वारा परिवर्तित है उसके चक्कर में न पड़ें। एक बार मुझे वशीकरण सिद्ध करने का शौक लगा लगभग ७ महीने में २०० से ज्यादा शास्त्रीय अथवा शावरी प्रयोग करने पर यही दो प्रयोग अनुकूल रहे। एक मित्र एक कन्या से विवाह के लिये इस प्रयोग

को किये थे। कन्या की शादी मंत्र प्रयोग के बाद दूसरे जगह हो गई जबकि शादी की सम्भावना ही नहीं थी। मित्र शादी शुदा व बाल बच्चे वाले थे ऐसी मूर्खतापूर्ण सोच वाले प्रयोग करेगें तो परिणाम कहाँ से आयेगा ।

मंत्र प्रयोग

यह मंत्र एक प्राचीन पाण्डुलिपि से लिया गया है। इसको करने से मानव,देव,यक्ष,गन्धर्व,नाग,पिशाच,प्रेत,आदि योनि के स्त्री को आकर्षित किया जा सकता है। इसका विधान बदल जाता है। यहाँ केवल मानव के वशीकरण का ही प्रयोजन दे दिया गया है। अन्य योनि के वशीकरण के लिये अनुभवी व्यक्ति का सहयोग ले अन्यथा समय चक्र मे फस जायेगें। सावधान रहें। उपरोक्त दोनों यंत्रो मे से एक ही प्रयोग करें,मंत्र चाहे तो प्रयोग कर सकते हैं या सामान्य कार्य हो तो यंत्र प्रयोग से हो जाता है। मंत्र आवश्यक नहीं है। मंत्र में संख्यांक समय आदि नहीं दिया गया है। किसी को प्रयोग जल्दी सिद्ध हो जाता है किसी को देरी से तो किसी को नहीं भी इसलिये स्वयं मात्रा निर्धारित कर लें। अगर दुर्भाग्यवश सफलता न मिले तो किसी योग्य विद्वान से परामर्श लें वह आपके बारे में

बता देगा कि ऐसा क्यों हो रहा है। प्रयोग करते समय अगर घबड़ाहट,बेचैनी या प्रतिकूल स्वप्न दिशा निर्देश आदि मिले तो प्रयोग बन्द कर दें या अपने गुरुदेव से सम्पर्क करें ज्यादा जोर जबरदस्ती न करें अन्यथा भारी नुकसान हो जायेगा।

मंत्र

तेलिया मशान में जरे चिराग । जगमग करे चिता की आग ।।
स्वर्णदीप सरसो का तेल । स्वर्ग परी से करदे मेल ।।
जा रे तेल"अमुकी"के पास । पूरी कर दे मन की आस ।।
तुझको कामाख्या की कसम । दण्डी बाबा गुरु की कसम ।।
तुझ पर गुरु का मंत्र सवार । सुन ले गुरु की यही पुकार ।।
वश मे कर ले उसको जाय । मिले"अमुकी"झट मुझसे आय।।
मंत्र परम लघु शक्ति अपार । महिमा अगम विदित संसार ।।

ॐ सतगुरु आयनमः ॐ कामाक्षाय नमः स्वाहा ।

अमुकी के जगह स्त्री का नाम ले।

विशेष-वशीकरण व आकर्षण का अन्तिम विकल्प है कामकलाकाली अनुष्टान जिसमें खोये गये पशु मानव या किसी भी योनि के प्राणी को वशीकृत व आकर्षित किया जा सकता है। मैने कई बार सफलतापूर्वक इसका प्रयोग किया है।

२-त्रिकाल साधन(श्री महागुरु साधन)

जीवन रहेगा तो समस्या भी रहेगी। रोग शोक दुःख सुख भाग्य दुर्भाग्य अच्छे बुरे दिन आते रहेंगे। कोई इनका आभास कर लेता है कोई झेलता रहता है। शास्त्रकारों ने इनको जानने के साधन बना दिये भौतिक कामनाओं में फसा(लिप्त) मानव इनको खूब उपयोग करता है तो ऊँचे स्तर पर गया योगी साधक अपने परमार्थ परमात्मा के लिये दोनों में यही अन्तर है योगी आत्मकल्याण के लिये काल में प्रवेश करने का प्रयास करता है तो भोगी सांसारिक कामनाओं के लिये । दोनों अपने अपने जगह सही हैं कौन सही कौन गलत इसका उत्तर मैं तो नहीं दे सकता। सबकी अपनी अपनी गति है अपनी अपनी मति है। कुछ लोग यह जानना चाहतें है कि मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ कहां जाऊगाँ मैं किसी समय किसी का पुत्र था किसी का पति आदि आदि। जीवन में न जाने कौन से प्रश्न विचार मण्डल में उत्पन्न हो जाये कहा नहीं जा सकता है। दिमाग की अपनी क्षमता है। तो कुछ लोग यह जानना चाहते हैं कि कल व्यापार चलेगा कि नहीं बकाया मिलेगा या नहीं बच्चा आगे जाकर यह बनेगा कि नहीं मेरे शत्रु का नुकसान कब होगा आदि आदि। तो कुछ भविष्य की

चिन्ता छोड़कर भूतकाल की बाते याद करते हैं मेरे साथ यह किसने किया इसमें किसका किसका हाथ था मेरी पत्नी का चरित्र कैसा था। मेरा खोया सामान कहाँ था मेरे घर से गया मानव पशु आदि कहाँ खोया था । मेरे घर मे चोरी किसने की थी मेरे साथ धोखा धड़ी किन किन लोगों ने की थी। यह पता लगाने का प्रयास करता है। कामनाओं से आशक्त मनुष्य यहाँ वहाँ प्रयास करता है। ज्योतिषीयों साधको सिद्धो के नाम का पता करता है वहाँ जाता है पैसा व्यय करता है। अपने किसी जन्म के कर्मानुसार संतुष्ट होता है या असंतुष्ट बर्बाद होता है या आबाद शोषण होता है या पोषण समस्या मुक्त होता है या समस्याग्रस्त यह वही जानता है। कामनाओं में फसा मानव कामनाओं से युक्त सिद्धो गुरुओं बाबाओं आदि नामधारी पुरुषों के यहाँ जाता है उसकी व्यथा यथा तथा वही समझ सकता है। उसी में से आप भी है मैं भी हूँ मैं भी रहूगां आप भी रहेंगे ऐसा चलता था चलता रहेगा मात्र और मात्र प्रतिशत कम या ज्यादा होता रहेगा। ऊपर मैंनें जो कहा वह आपके साथ हो सकता है मेरे साथ भी हो सकता है। शास्त्रकारो ने इस विद्या को नित्कृष्ट कहा कि किसी समय को जानना उसको समाधान करने का प्रयास करना वह भी समय से पहले प्रकृति विरुद्ध कार्य है। वही मानव को आगामी योजना पर कार्य करना समय

से पहले प्राप्त करने का प्रयास करना लौकिक लोगों के लिये उत्कृष्ट कर्म है। अपनी अपनी मर्यादा है कोई भाग्य का पक्षधर है तो कोई कर्म का । मैंने अपने तन्त्र जीवन में काल को जानने का कई प्रयास किया कुछ में तो सफल रहा तो कुछ में असफल कुछ तो प्राप्त करने में कम समय कम व्यय लगा तो कुछ में अधिकाधिक समय व अधिकाधिक व्यय जो मेरे औकात से कहीं ज्यादा था फिर भी मैंने प्रयास किया उसी साधन को जानने की कड़ी में यह भी प्रयोग है जो पूर्ण प्रमाणित व अनुभवजन्य है । साथ में पूर्ण सात्विक निरापद शुद्ध स्वच्छ व गुरु मंत्र की तरह ही है। जिसमें ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवों की कृपा तथा आदि गुरु भगवान दत्तात्रेय की सम्पूर्ण कृपा प्राप्त होती है। समस्त कामनाओं का मानव पूरा उपयोग करता है तथा भूत भविष्य वर्तमान का ज्ञाता हो जाता है। कैसे अपने परिश्रम व गुरुदेव के प्रति आत्म समर्पण से मात्र यही एक योग जीवन को सब प्रकार से पल्लवित करने के लिये पर्याप्त है वह भी बिना किसी सन्देह के ब्रह्मदेव तो असुरों को वर देने में आतुर है। विष्णु जग के पालनहार हैं तो शिव के बारें में क्या लिखना मुफ्त के देव हैं। इन तीनो लोगों (देवों) के बारे में तमाम ग्रन्थो में विशद वर्णन है। इनका ही संयुक्त रुप हैं आदि गुरु दत्तात्रेय...... आप समझ ही गये होगें।

मंत्र प्रयोग

सामान्य पूजन दिग्बन्ध आदि करके दत्त चित्र या त्रिदेवो के संयुक्त चित्र का पूजन करें जो आपके समय श्रम व आय के हिसाब से हो। आप आजकल तमाम त्रिकाल दर्शियों के यहां से यह मूर्ति वह मूर्ति आदि भी मिल रही है। वह भी ले सकते हैं अगर आप के पास पैसे की अधिकता हो तो आयकर वालों से तो अच्छे ही हैं ये सिद्ध गुरु बाबा लोग अस्तु । सामान्य पूजन ही करें। बहुत ताम झाम आवश्यक नहीं है। पुस्तक बढ़ जाने से आवश्यक उपक्रम ही रखे गये हैं शेष अपने सहयोगकर्ता से जान लें। पूजन हवन विधान तर्पण मार्जन भोज आदि सामान्य व्यवस्था है जो हर कोई जानता है। इसमें परेशानी की कोई बात नहीं फिर भी आप पाठक हैं आपका अधिकार है हमें भी अवगत करा सकते हैं। वह भी बिना संकोच के । विचार किया जायेगा निश्चित है समय की सीमा में न बांधे क्योंकिं यह काल ज्ञान का प्रकरण है। हवन की मात्रा मंत्र की मात्रा आदि पर विशेष बल नहीं दिया गया है। वैसे मैने इस प्रयोग को २१ दिन में ११ माला के हिसाब से पूरा किया था। हवन सामान्य था उसी अवधि में स्वप्नदर्शन सुदूर संकेत दर्शन काल का अभास होने लगा था ।भोजन शयन वस्त्र सामान्य

व शुद्ध रखें। अनुष्ठान काल में ही महाप्रभु दत्तात्रेय जी का साक्षात्कार निश्चित रुप से हो जाता है पर किस रुप में कहां नजर तेज रखनी पड़ती हैं अन्यथा तुलसीदास जी चन्दन लगायेगें और श्रीराम जी सामने ही रहेंगें पर मैं न तंत्राचार्य हूँ न मैं मंत्राचार्य न मैं सिद्ध हूँ न मैं गुरु। मैं पेशे से अध्यापक हूँ १७ साल से ४० वर्ष के बीच मैने जो साधन जिस विधि से किया हूँ वही दे रहा हूँ। मुझे शास्त्र का क ख ग का ज्ञान नही है इसलिये मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह प्रयोग शास्त्रीय व्यवस्था पर खरा रहेगा पर यह निश्चित है कि आपके व्यावहारिक जीवन में उपयोगी रहेगा । वह भी बिना किसी विवाद के । स्वयं साधन करें स्वयं प्राप्त करें किसी पर विश्वास न करें शिवाय परमात्मा के विश्वास धन हानि का प्रथम चरण है। कामनाओं को साधने वाले लोग मुझसे सम्पर्क न करे। परिश्रमी आत्मसंतोषी कर्म प्रधान प्रकृति वाले व्यक्ति स्वतंत्र हैं। इस प्रयोग से जुड़े पक्ष पर विचार का स्वागत है पर यह बताओ वह बताओ वाले लोग अन्यत्र सम्पर्क करें । शिवाय साधनात्मक विषय के।

विशेष–यदि एक गमला या मिट्टी की हाण्डी में गूलर का पौधा लगा लिया जाय और सामने रखकर पूजन मंत्र जाप किया जाय तो उत्तम फल प्राप्ति होती है अगर प्रकाश न हो तो पूजन के बाद उसे छत या

धूप में रख देना चाहिये। अनुष्ठान समाप्ति के बाद पौधे को शुद्ध जगह लगाना चाहिये। पौधे का रोपण अनुष्ठान से पहले करना चाहिये ताकि वह साधन के मध्य सूख न जाय। गाय,कुत्ता,पशु मानव यदि साधन के मध्य आ जाय तो उचित व्यवस्था देनी चाहिये । अगर किसी कारण से सम्मान सम्भव न हो तो यह ध्यान रखे कि अपमान न हो साथ में मानसिक क्षमा याचना व अपनी समस्या का आभास करवा देना चाहिये । दत्तात्रेय स्त्रोत का पाठ एक बार मूल मंत्र से पहले व साधना के अन्त में करके क्षमा प्रार्थना कर लेना चाहिए।

मंत्र

विनियोग–अस्य श्री दत्तात्रेय स्यैकाक्षरी मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः गायत्रीछन्दः श्री चतुर्भुज दत्तात्रेयो देवता मम् श्री दत्त प्रसाद सिद्धये विनियोगः।

न्यास- कर–न्यास	हृदयादिन्यास
द्रां अंगुष्ठाभ्यामं नमः	द्रां हृदयाय नमः
द्रां तर्जनीभ्यां नमः	द्रां शिरसे स्वाहा
द्रां मध्यमाभ्यां नमः	द्रां शिखायै वषट्
द्रां अनामिकाभ्यां नमः	द्रां कवचाय हुम्
द्रां कनिष्ठकाभ्याम् नमः	द्रां नेत्रत्रयाय वौष्ट्
द्रां करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	द्रां अस्त्राय फट्

ध्यान

सदानन्दात्मकं शुद्धं सात्विकं तारकं परम् ।
विश्वरुपम् जगद्योनिं दत्तात्रेय भजाम्यहम् ।।

मूलमन्त्र

ॐ द्राम् ह्रीम् क्रोम् त्रिगुण स्वरुपाय महाअवधूताय ।
आदि गुरु दत्तात्रेआय त्रिकाल सिद्धिम् कुरु कुरु स्वाहा ।।

निवेदन

मैने एकाक्षरी बीज मन्त्र से ही विनियोगः न्यास ध्यान आदि लिख दिया है। अगर आपको काल ज्ञान के मंत्र का न्यास आदि कही से प्राप्त हो जाय तो उसी से कर ले कोई आपत्ति नहीं है।

हवन सामग्री

केसर,कस्तूरी,शक्कर,घी,गुगुल,चन्दन व अन्य उपलब्ध हवन सामग्री से हवन करे ।

निषेध

दत्तात्रेय भगवान की पूजा में हल्दी कुमकुम(रोली) नहीं लगानी चाहिये ।

भूत प्रेत-पिशाच प्रकरण

भूत क्या हैं ये कहाँ रहते हैं क्या मानसिकता है इनकी,कैसे प्रभावित करते हैं। मानव जीवन को इनका लोक कैसा है। सभी विद्वान अपने अपने ढंग से शोध से बताते हैं कोई कहता है पैर पीछे होते हैं। कुछ अच्छे प्रेत होते हैं जिन्होंने लोगों की सहायता भी की थी लोगों के असम्भव कार्य को सम्भव किया था। तुलसीदास जी के जीवन को भी प्रेत कथा में जोड़ा गया है। स्पष्ट रुप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है कि सच क्या है झूठ क्या है। जो भी हो अपने अपने अनुभव की बात है। मैं व्यक्तिगत रुप से भी भ्रमित रहा हूँ। मैंने जीवन में बहुत प्रयास किया कि ठोस आधार पर पहुंच जाऊं पर निर्णय नहीं कर सका। कभी लगा कि इनका अस्तित्व हैं तो कभी उलझ गया। मेरे ही गांव में एक व्यक्ति के बारे में प्रचलित था कि प्रेत शक्ति से बहते जल को रोक देते थे या लोगों को भ्रमित कर देते थे जो भी रहा हो मैंने उनको देखा था पर उनके कार्य के बारे सुना था। उनके देहावसान के बाद उनके ही घर में कई लोग अकस्मात मर गये कोई ट्रेन के आगे जाकर तो कोई फांसी लगाकर कोई जहर खाकर आदि आदि । परिवार की स्थिति से ऐसा लग जाता है कि प्रेत प्रभाव

ही रहा होगा। हमारे प्रथम गुरु जी जिनके यहाँ मैं ज्योतिष सीखने जाता था वह भी हनुमान मंत्र का प्रयोग करते तो सामने बैठे व्यक्ति को हनुमान जी काले रंग में उस व्यक्ति को दिखाई देते थे जो प्रेत ग्रसित रहता था। जिसको हनुमत वीर नहीं दिखते तो रोगी बताकर दवा के लिये भेजते थे। मैं भी वहीं बैठा रहता या अन्य लोगों को भी हनुमत दर्शन नहीं होते स्वयं रोगी को भी नहीं। तो क्या प्रेत लोक में गया व्यक्ति जो मानव के आस पास रहता था देख लेता था। बुद्धि कुंठित हो जाती है कैसे। एक बार मेरे यहाँ दूर से कुछ लोग आये जिनका भ्रम था कि उनके गाँव में प्रेत पिशाच रहता है। मैंने हनुमत वीर के मंत्र पढ़कर उनको कुछ लकड़ी के टुकड़े दे दिये। आज तक वे लोग इस भ्रम से मुक्त हैं पर मैं आज तक सत्य असत्य का निर्णय ही नहीं कर सका कि वे वास्तव में बाधा से ग्रसित थे या मानसिक भ्रम से। मैं अगर यह कहूँ कि प्रेत होते हैं तो मुझे अन्धविश्वासी होना होगा जो मेरे प्रकृति के विरोधी होगा। नहीं कहूँ तो इतना ठोस आधार मेरे पास नहीं है। एक बार मैं एक मित्र के साथ कहीं जा रहा था तो पीछे किसी मनुष्य के आने का आभास आ रहा था नजदीक जाने पर एक पशु अपना विरोध जता रहा था। ऐसा तीसो बार हुआ था जब हम लोग जाने का

प्रयास करते तो एक मनुष्य जो निर्वस्त्र था पीछा करता महसूस होता और जब उसके पीछे जाते तो एक पशु होने का भ्रम हो जाता। काफी प्रयास करने पर न पशु ही मिला न मानव क्या था मानव या पशु या प्रेत बुद्धि भ्रमित हो गयी।जीवन में जब मैंने कुछ इष्टों की गुरुओं की कृपा प्राप्त कर ली तो कुछ लोग आने जाने लगे थे। उसी में एक मित्र ने अपने रिश्तेदार के यहाँ कुछ बाधायें हैं का निवारण करने के लिये मुझे तैयार कर लिया था मेरी रुचि भूत प्रेत में कभी नहीं रही है। पर मैने सोचा कुछ हवन जाप हो जाय तो ठीक रहेगा साथ में एक ब्राह्मण भी जाने वाले थे क्योकिं मैं हवन जाप किसी का करता तो साथी ब्राह्मण को द्रव्य दक्षिणा दिलवा देता ।उसी रात को जो मित्र हमें और पण्डित जी को ले जाने वाले थे एक बारह पन्द्रह फीट का ब्रह्म प्रेत जो कि बरगद के पेड़ में उल्टा लटका दिखा जो कीड़े पड़े शरबत का पान कर रहा था बताया कि जिसकी तुम सहायता करने जा रहे हो उनके परिवार वालों ने मेरी हत्या करके मेरी सारी सम्पत्ति ले ली है। मुझे निद्रावस्था में आवाज सुनाई दे रही थी। तुम पूर्वजन्म में फला थे फला कार्य के लिये तुम आये हो अपने कार्य पर ध्यान दो अगर नहीं मानोगे तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा पर परिवार वालों को....आदि आदि

इसके बाद वह प्रेत उस पण्डित जी के घर पहुँचा रात भर उनके छत पर खिड़की पर दरवाजे पर धमा चौकड़ी की । पण्डित जी ने सुबह मुझसे जाने के लिये मना कर दिया मैं भी यही चाहता था। इज्जत बच गयी फिर मैंने आज तक भूत प्रेत आदि के बारे में सोचना ही छोड़ दिया। मगर भगवान को कुछ और ही मंजूर था। मेरे भाग्य ने सदैव मेरे साथ लुका छिपी की है। इसके बाद मेरी नौकरी लग गयी। और ऐसे जगह फस गया जहाँ का पूरा परिवार ही भूत प्रेत को मानता था बीमारी हो गई....बाधा हो गई....काम बिगड़ गया....दुर्घटना हो गई....फसल नहीं हुई....कुछ भी हो गया भूत प्रेत। वहीं मेरा रुम था उनका ही भोजन करना पड़ता सारी व्यवस्था उनकी थी । जब मै रात को उनके कमरे में पहले दिन सोया तो खिड़की से कोई मुझे भद्दी गालियां देता जब बाहर जाता तो कोई नहीं रात को मुझे कौन गाली देगा और क्यों। मैंने माँ भगवती कामकला काली से प्रार्थना की थी कि मुझे यहाँ से सकुशल निकाल लें। क्योकिं मैंने उस समय तक कुछ साधना करके कृपा प्राप्त कर ली थी। जिनके घर में आज तक अनाज का दाना नहीं था वह अन्नवान हो गया घर बन गये,पैसे वाले हो गये पर २ से ७ साल तक मैं वहां रहा सब कुछ मिल गया उनको पर मुझे.....नहीं। बल्कि मैंने जीवन [redacted]

के बहुमूल्य रत्न माँ कामकला काली की कृपा का बहुत बड़ा हिस्सा लुटा बैठा और जब ७ साल बाद वहां से निकला तो हारे जुआरी की भांति घर आ गया और माँ से कह बैठा बहुत बड़ी गलती हो गयी पर देर हो चुकी थी और मैने दूसरा रास्ता पकड़ लिया शायद इसी आशा में कि मैं तो कुपुत्र और नालायक हूँ पर तू तो नहीं। और दुर्भाग्य रहा कि जिस श्मशान पर माँ का पूजन कीर्तन किया करता था उधर जाने का सौभाग्य नहीं मिला । एक बार मैं एक मित्र के घर गया था और ज्योहिं सोने का प्रयास किया तो एक महिला ने मुझे अपनी दुख भरी कथा सुनाई कि बिना दवा के उसके प्राण निकल जायेंगें। सुबह जब मैंने मित्र से पूछा कि मित्र उस महिला को दवा करवा दो तो उसने कहा कि वह तो मर गई है। मैं अवाक रह गया। वहां से जान बचा कर भागा फिर उधर कभी नहीं गया उसी के पास महाभैरव का मन्दिर और श्मशान है वहां मैंने पूजा की थी पर उस गाँव में जाने का साहस नहीं हुआ । हमारे वर्तमान गुरुजी भूत प्रेत महारथी है वह इन्हीं कार्यो में रुचि रखते हैं। हमारे एक मित्र के विशेष आग्रह पर उन्होंने एक मंत्र दे दिया उनके दस या बारह दिन जाप करने से ही उनकी पत्नी को सफेद सफेद दाग होने लगे गुरुजी को सूचित किया गया शान्ती किये

तब जाकर मामला शान्त हुआ। मैने गुरु जी से पूछा तो उन्होने बताया कि जो मंत्र है वह किसी भी प्रकार के भूत पिशाच बाधा को किसी भी प्रकार से परिचित करा देता है। कर्ण पिशाच के बारे में सुना जाता है कि भूत भविष्य की जानकारी तथा प्रेत द्वारा किसी प्रकार की वस्तु को मंगाया जा सकता है। मेरे जीवन में बहुत समस्या रही है आधार नही मिलने के कारण कई बार खीझता तो अपने पर बहुत गुस्सा आता कि मैने जीवन में मैने यह साधना कि वह साधना कि पर विलम्ब हो रहा है। इसलिये मैने एक बार गुस्से में आकर मंत्र महार्णव जैसे महान मंत्र ग्रन्थ से एक पिशाचिनी की मंत्र साधना शुरु कर दी। दूसरे दिन ही उपद्रव करने लगी वह पिशाचिनी मैने साधना छोड़ दी तब मुझे यह ध्यान आया कि गुरुदेव ने कहा था कि भूत प्रेत के चक्कर में न पड़ो अन्यथा चक्कर खा जाओगे।

भूत-प्रेत को प्रसन्न करने के उपाय

यहां जो उपाय लिखा जा रहा है वह शुद्ध है चाहे कितना ही दुष्ट प्रेत हो चाहे कितना ही भयंकर प्रेत बाधा क्यों न हो चाहे कितना ही कर्णपिशाचिनी प्रेतनी आदि की साधना में त्रुटि हो इससे लाभ अवश्य मिलता है वह भी कितना, (बिना)

किसी मेहनत के देरी हो सकती है पर परिणाम निश्चित मिलेगा मेरे द्वारा आजमाया गया है निश्चिंत रहें। सर्वप्रथम (अमावस्या के दिन का चयन करें फिर किसी पीपल के वृक्ष के यहां जाकर उसमें कच्चे बर्तन यानि कि मिट्टी के पके वर्तन से जल डाले जल में गंगाजल डाले । फिर पीपल से आज्ञा लेकर अपनी समस्या के लिये प्रार्थना करके ५ पत्ते जो सुन्दर हों तोड़ लें। अब उन पाँचो पत्तो पर ५ सुपारी रखें फिर सुपारी पर काले तिल और सुगन्धित पुष्प चढ़ावें अगरबत्ती लगायें पीपल के पत्ते पर ही गरी, मिश्री, बताशा,लाचीदाना,बर्फी,पेड़ा जो भी उपलब्ध हो रखें कुछ इत्र भी छिड़क दें। पाचों पत्ते के पास ५ कुल्हड़ पानी रख दें फिर हाथ जोड़कर चले आयें इसके अलावा कुछ नहीं करना है।) यह प्रयोग प्रति अमावस्या करते रहें अगर आप नहीं हैं तो पत्नी पुत्र कर दें या परिवार का कोई सदस्य कोई हानि नहीं होगी फायदा ही फायदा होगा। तब तक करें जब तक आपकी इच्छा पूर्ण न हो जाये। मेरे एक विरोधी थे जो मेरा सदैव नुकसान किया करते थे। उनका अन्तिम काल बहुत ही अभाव में रहा हमारे पिता जी के सहपाठी थे मैंने नई नई बाईक खरीदी थी उन्ही के घर से गुजरना पड़ता था मरने से पहले उन्होंने मुझे आवाज दी थी ऐसा मुझे लगता

है पर जल्दी के वजह से ध्यान नही दे सका। अगले दिन वह मर गये तीसरे या चौथे दिन ही मैं सोया था कि आवाज सुन रहा था बहुत दुःख भरी आवाज थी उनका कहना था कि मेरे पिता जी और उनके एक मित्र ने उनके अन्तिम अवस्था में उनकी इच्छा नहीं जानी थी मेरे पिता जी के दूसरे मित्र के यहां उनके मरने के पहले खूब बृहद भोजन का प्रबन्ध किया गया था पर उनको किसी ने बुलाना तो दूर मुख से भी नहीं पूछा था। तब मैने पूछा कि आप मुझसे क्या चाहते हैं। उनके इशारे को मैं समझ गया। एक सप्ताह बाद मैने ५ पीपल के पत्तों पर ५ बर्फी रखकर ५ कुल्हड़ करके पीपल के यहाँ रख दिया था। जब तक मैंने नहीं रखा था एक सप्ताह में ४ बार उनकी आवाज सुनाई दी थी और मजे की बात यह है कि उस दिन के बाद आज दो साल हो गये उनका दर्शन नहीं हुआ ।अगर आपको लगता है कि घर के अन्दर ऐसी समस्या है तो निचले प्रयोग को करें। शांति और सम्पन्नता होगी जोर जबरदस्ती न करें।(अमावस्या को रात्रि में जब सुविधा हो कुछ गुलगुले सरसों या उपलब्ध तेल में बना लें। कुछ ५ प्रकार की मिठाई ५ बर्फी पलाश के पत्तल या महुये के पत्तल या बरगद के पत्तल पर रख दें। दो गुलाब के फूल न मिलने पर गुलाब जल या इत्र,दो लौंग एक नीबू रख दें फिर पत्तल को पूरे घर में घुमा दें फिर ले जाकर पीपल

के पेड़ के यहाँ रख दें ५ कुल्हड़ में पानी रखना अनिवार्य है। जल में गंगाजल अवश्य डाल दें। दो अगरबत्ती पीपल के यहाँ जलाये तथा कुछ जल भी अर्पित करें। बिना पीछे देखे घर आ जाय स्नान या हाथ पैर धोकर ही घर में प्रवेश करें। डर लगे तो कई लोग साथ जा सकते है। यह प्रयोग जितनी अमावश्या हो सके करें।

निवेदन- बिना किसी ठोस आधार यानि कि इष्ट कृपा के भूत-प्रेत सम्बन्धी कार्य न करें। उपर लिखे प्रयोग शान्ति के है कर सकते हैं। मैंने एक बार गलती से हनुमतवीर शाबर प्रयोग का उच्चारण ऐसी जगह कर दिया था जहाँ भूत-प्रेत से ग्रसित कई लोग थे। मंत्र उच्चारित करते ही वे आवेश से ग्रसित हो गये थे। वह मंत्र मैंने हनुमत प्रकरण में दे दिया है जिसका मात्र एक बार बिना सिद्ध किये ही उच्चारण करने से श्री हनुमत बीर भूत-प्रेत पिशाच से रक्षा करते हैं और घर में मात्र दिन भर में एक बार स्मरण करने से बाधा नहीं होती है।

श्री हनुमत प्रकरण

हनुमत देव प्रत्यक्ष देवता है वेद,पुराण,तंत्र-मंत्र,ग्राम्य शैली में इनका विशद वर्णन है। विश्व के अधिकांश देशों में इनके मन्दिर व पूजा अर्चन का विधान प्राप्त होता है। कलिकाल के इस प्रथम चरण में जिन देवों का प्रत्यक्ष परिणाम व प्रमाण उपलब्ध है उनमें श्री हनुमान व दुर्गा सबसे आगे हैं। शेष सब देवी देवताओं की अपनी अपनी महिमा है जिससे भक्तजन अपने कर्मानुसार पोषित होते हैं। हनुमान लौकिक देव हैं और सांसारिक कामनाओं की पूर्ति अतिशीघ्र हो जाती है परन्तु उनके स्वभाव के विपरीत आचरण करने पर मानव को विभिन्न प्रकार के कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर वशीकरण के कार्य से अनावश्यक धनार्जन के प्रयास से या ब्रह्मचर्य न रहने के कारण व्यक्ति को उनकी कुदृष्टि का कोप भाजन भी बनना पड़ता है। शत्रु निवारण भूत-प्रेत बाधा निवारण रोग निवारण में अग्रणी हैं परन्तु स्वयं का व्यवहार व चरित्र भी शुद्ध रखना पड़ता है। मेरे स्वयं के परिवार में स्थानाभाव के कारण हनुमत पूजा का विपरीत प्रभाव देखने को मिला था जहाँ पूजा वहीं सोना वहीं खाना वहीं जूते चप्पल रखना और वहीं दिन भर में अनगिनत बार आना जाना आदि। बालकों और वृद्ध ब्राह्मणों पर हनुमान जी शीघ्र कृपा करतें हैं। स्त्रीयों को हनुमत पूजा तब तक नहीं करनी चाहिये जब तक कि उनका धर्म सदैव के लिये बन्द न हो गया हो। मैने जब तंत्र में

पैर नहीं रखा था तो हनुमान जी के स्त्रोत कवच आदि का मात्र पाठ किया करता था वह भी ६० प्रतिशत तक गलत क्योकिं संस्कृत मुझे आती ही नही थी पर सदैव आभास रहा कि कुछ तो कृपा हो रही है। मेरे परिवार में कुछ समस्या ऐसी व्याप्त हो गई कि हार कर अनाप सनाप हनुमत पूजा करनी पड़ी क्योकिं पूजन विधान का अभाव तो रहा ही कोई योग्य विद्वान नही मिला जो मदद कर सके कुछ ब्राह्मण मिले वह भी भ्रमित करने वाले स्वयं ही गुरु बना स्वयं साधक ।पर उसमें घाटा भी रहा तो फायदा भी जिससे आगे का मार्ग मिला और कुछ इस भारतीय विद्या का क ख ग जान सका। हनुमान जी के बारे में ज्यादा लिखना बेकार प्रयास होगा क्योकिं एक छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े तक इनकी महिमा जानते है। एक मुस्लिम तांत्रिक ने मुझसे कहा कि तुम्हारे बन्दर से हम लोग चोरी खोयी चीज का पता लगाते हैं। बड़े काम का है बन्दर वे हनुमान जी को बन्दर कहते हैं। जैसे गंगा जी को दरिया गंगा नही कहते हैं। कुछ लौकिक कामनाओं के विधान उदाहरण सहित हैं ध्यान दें ।

लौकिक प्रयोग

सुन्दर काण्ड-लगभग सन् २००० के समय मैं कुछ ऐसे

कार्यों में चला गया जिसका प्रभाव यह रहा कि मैं बन्धन में बंध गया नौकरी की डिग्री भी मिल गई थी इस शंका से आशंकित होकर मैंने पाठ शुरु कर दिया कि नौकरी मिलने पर भी कोई समस्या न आ जाय हारे को हरिनाम् मजबूरी में ही आदमी भगवत् शरण में जाता है। भला चंगा आदमी पूजा पाठ ध्यान में क्यों अपना समय श्रम व पैसा व्यय करेगा । मैं रात दिन जागे बैठे सोते बिना किसी विधान के पाठ करता रहा न श्रम का ध्यान दिया न समय का न गिनती का बस पाठ करता रहा परमात्मा से अपने कुकर्म को अवगत कराता रहा परिणाम यह हुआ कि मात्र दो वर्ष में ही उस समय के न्यायाधिकारी ने सबको जबरदस्ती बुलाकर उस मुकदमा को सदैव के लिये समाप्त कर दिया। मैने हनुमत कृपा मानकर आगे तंत्र प्रयोग मे रुचि बढ़ा दी और जो भी आया उसे हनुमत प्रयोग का विधान दे दिया। आश्चर्य सारे लोग समस्या मुक्त हो गये रोगी ही वैद्य बन गया।

हनुमान चालीसा

मानव स्वार्थ से युक्त है समस्या आने पर सामाधान खोजता है समाप्त होने पर प्रमाद में लिप्त होता है। कौन व्यक्ति ट्रेन से उतरकर फिर ट्रेन देखने जाता है। कौन रोगमुक्त होने पर

औषधालय जाता है कौन सामग्री मिलने पर दुकानदार की हालत जानने जाता है कौन नौकरी मिलने पर गुरु के पास जाता है,कौन मंजिल पर पहुँचने के बाद मार्गदर्शक को याद रखता है कोई नहीं । अगर मानव यही करने लगा तो देवत्व को प्राप्त हो जायेगा मनुष्य और मृत्युलोक का अस्तित्व ही मिट जायेगा। मैं वही किया जो लोग करते हैं। सुन्दरकाण्ड का पाठ करना छोड़ दिया इधर उधर घूमने लगा कुछ दिन तक ऐसे ही चला। परन्तु बाद में याद आया कि दो लोगों से कुछ पैसे लेकर उपरोक्त समस्या से मुक्त हुआ था। बलाभाव था मोटे काम नहीं हो सकते थे ज्यादातर लोंगो ने सम्बन्ध तोड़ लिये थे परिवार वालों से भी अच्छी मदद नहीं मिल रही थी कारण था घर में बहुत अच्छी आमदनी नहीं थी उस समय। लिहाजा मैं पुनः हनुमान जी की शरण ग्रहण करना उचित समझा। सुना था कि सौ पाठ करने से हनुमान जी प्रसन्न हो जाते हैं। यह शत बार पाठ कर जोई-छूटहिं... । मैं भी सौ पाठ करने का प्रयास करने लगा पर सौ पाठ करना आसान नहीं था अकेले इस विचार में भी कुछ समय गुजर गये । परन्तु एक बार अचानक ही पाठ शुरु कर दिया विधान की जानकारी नहीं थी फिर भी जो किया सो किया यह समझ लें आधा अधूरा ही विधान किया होगा । पर पाठ

विशेष अनुग्रह ही रहा कि
मैंने शुरू किया था हनुमान जी का परायण कर
मैंने सात-आठ घण्टे में ही एक सौ आठ पाठ का रद्द हो गई
दिया। कुछ दिन बाद अध्यापकों की भर्ती निकली वह भी
मैं निराश हो गया फिर कुछ दिन बाद दूसरी प्रक्रिया बड़ा
रद्द । मेरा दुर्भाग्य है कि मेरा सब कार्य होता तो है पर कि
मुस्करा-मुस्कराकर हसकर नहीं। इसी बीच मुझे ध्यान आया एक
कुछ हवन कर लूं पाठ तो मैंने बहुत पहले कर लिया था। लकड़ियो
मित्र को धन्यवाद देता हूँ जिसने बहुत भारी संख्या में असम्भव
की व्यवस्था कर दी जो उस समय उस मात्रा में मेरे लिये तक
था। हवन का कार्य शुरु हो गया लगभग ५ या ८ महीने बन
यह कार्यक्रम चला पुनः भर्ती शुरु हुई और मैं अध्यापक
गया ।

अन्यत्र-१

एक ऐसी महिला जिनके शरीर में रक्ताभाव के कारण आपरेशन नहीं हो सकता था सौ पाठ वाला अनुष्ठान कराया गया इधर पाठ चलता रहा उधर वैद्यकीय इलाज, हनुमान जी की कृपा से महिला सुरक्षित है। पाठ तब से समय-समय पर चलता रहता है ऐसे अनुष्ठान की महिमा कौन वर्णित कर सकता है ।

२

एक ऐसी स्त्री जिसका पति खो गया था उसने पीपल की

उल्टी परिक्रमा करके हनुमान चालीसा का पाठ किया और मात्र २१ दिन में उसका पति घर आ गया ।पति ३ बार घर से भागा पत्नी ने तीनो बार यही प्रयोग करके उसको वापस किया । चौथी बार जब वह घर से गया तो उसने मुझे अपने घर बुलाया मैं घर जाकर उस स्त्री के आस पास परिस्थितयों का विचार किया तो उस स्त्री के चरित्र पर संन्देह हुआ मैंने उसको प्रयोग बन्द करने को कहकर घर वापस आ गया हनुमान जी से क्षमा प्रार्थना कर उससे व्यवहारिक सम्बन्ध ही तोड़ लिया। प्रयोग देते समय पात्रता विचारना आवश्यक है।

३

एक ऐसी बहन जिसका भाई घर से चार पाँच साल पहले चला गया था मैंने हनुमान चालीसा का प्रयोग बताया ४०वें दिन हनुमान जी स्वप्न में प्रकट होकर कुछ खाने की माँग करने लगे उसने यह बात बाद में बताई मैंने स्वयं जाकर हनुमान जी को गुड़ चना केला आदि भोग में दिया परिणाम आने तक सम्बंध टूट गये क्या हुआ पता नहीं लगा पर यह अवश्य था कि अनुष्ठान के समय उसका पूरा पता किसी मानव के द्वारा लग गया था ।

४

एक दो ऐसे मानव मेरे पास आये जो मुकदमा नौकरी आदि

के लिये परेशान थे। उनको मैंने चालीसा अनुष्ठान बता दिये फिर दुबारा नही आये पर मुझे ऐसा पूर्ण विश्वास है कि उनका मंगल अवश्य हुआ होगा। हनुमान जी अपने भक्तों को निराश नही करते पर समय व पात्रता का परीक्षण अवश्य करते हैं। अगर आप संतुष्ट नही तो आप की महत्वकांक्षा का क्या किया जा सकता है।

बजरंग बाण(अस्त्र शस्त्र)प्रयोग

मानव को हर स्थिति में सावधान रहना चाहिये न जाने कब क्या हो जाये न जाने कब कौन मान मर्यादा इज्जत की धज्जिया उड़ाने लगे ऐसे मे अगर आप असमर्थ है तो धार्मिक अस्त्रों का प्रयोग करना आना चाहिये। क्योंकि गरीबों को असमर्थो को न्यायपालिका से न्याय तो दूर स्वयं भी दोषी होना पड़ेगा। स्वयं की चोरी होने पर भी आपको पुलिस को पैसा देना पड़ेगा। फिर भी आप परेशान होंगे क्योंकि चोर आपसे ज्यादा खर्च कर देंगे आपका ही पैसा देने में उनको क्या हर्ज। बहुत पहले मैं जब प्रथम गुरुजी के यहाँ ज्योतिष सीखने जाता तो बात-बात में उन्होंने बजरंग बाण का अति आसान हवनात्मक प्रयोग बताया था। मारण में मेरी रुचि नहीं थी इसलिये मैंने ध्यान नहीं दिया । उन्होने हजारो बार हवनात्मक बजरंग बाण से चोरो का पता व चोरी के समान बरामद करवाया था। मैं मात्र सुनता था वह भी [redacted] निष्प्रयोजन। मैंने स्वयं

भी अपने पिता को पाठात्मक मारण प्रयोग करते देखा था पर हवनात्मक मारण गुरुजी से सुना था। मेरे पिता ने बिना नियम जाने उनका प्रयोग किया था शत्रु तो सदैव के लिये शान्त हो गये पर स्वयं के परिवार पर काफी दिनो तक संकट रहा अगर मेरे जैसा कुपुत्र इस परिवार में न होता तो इस मारण का विपरीत प्रभाव कितना कष्टदाई होता यह सोचकर भी मन काँप जाता है मुझे लम्बे समय तक इन विपरीत समस्याओं से जूझना पड़ा है अगर स्वयं महाबीर की कुछ कृपा मुझ पर नहीं होती तो आज मेरे परिवार को इस समस्या से निजात पाना मुश्किल होता। मारना तो सभी जानते हैं बचाना कोई-कोई। शाप तो सभी दे देते हैं पर उसको वापस करना शायद कोई। एक बार ऐसा समय आ गया कि मारण जरुरी हो गया तो मैंने किया समस्या टल गई। फिर हनुमान जी से क्षमा याचना कर प्रायश्चित कर्म किया। लम्बे समयोपरान्त गये सामान के प्राप्ति के लिये प्रयोग से अच्छे माध्यम से पुनः पुनः प्राप्ति के योग निर्मित हुये। एक बार ऐसा समय भी आया कि प्रयोग अनिवार्य था पर मैं असमर्थ क्योकिं गलत लोगों के हाथ में यह विधान जाने से इसका शोषण हुआ और मैं दण्डित,सोचता हूँ तो फिर सिर पीट लेता हूँ क्यों किया मैंने ऐसा क्यों....?

अन्यत्र-१

मेरे एक सहयोगी के पैसे व कुछ सामग्री छीन लेने पर यह प्रयोग मैंने बताया था जिससे उनके सामग्री भी मिली छीनने वाले भी पकड़े गये दण्डित हुये पर बाद में मुझे सहयोगी के चरित्र पर सन्देह हुआ जो बाद में सही निकला। इन्हीं ने मेरे बिना अनुमति के एक हत्या जो गुमनाम थी का इसी प्रयोग से पर्दाफाश कराया था बाद में मुझे बहुत कष्ट हुआ । मैंने यह प्रयोग देना ही छोड़ दिया ।

अन्यत्र-२

एक साथी अध्यापक के घर से गहने गायब की दशा में जो उन्हीं के भांजी के थे उनको ही आरोपी माना गया था। इस समय यह प्रयोग किया गया तो उनकी दूसरी भांजी के द्वारा गलती से चला गया था जो विद्यालय में छोटे बच्चों के द्वारा पता लगा तब जाकर समस्या खत्म हुई। दूसरी भांजी ६ साल की थी गलती से खिलौना समझकर ले गई थी।

दूसरे समस्या में एक पशु के गायब होने में भी यह प्रयोग किया गया अचानक एक परिचित व्यक्ति द्वारा एक अन्य के घर बंधी होने पर उसको उचित मूल्य देकर (खाने पिलाने का खर्च) वापस लाया गया। जबकि तांत्रिक मान्त्रिक के चक्कर में पड़कर पैसा भी व्यय हुआ था और गलत-गलत नाम भी जिनको कुछ पता

नहीं था ।

अन्यत्र-३

एक मेरे खास मित्र जो पैसों के लिये कुछ भी कर सकते है के कई बार अनुरोध करने पर मैने गुस्से में आकर बजरंग बाण से लक्ष्मी को मारने का आदेश दे दिया । कठिन परिश्रम करने पर हनुमान जी ब्रह्मचारी ब्राह्मण के वेष में आकर बता दिये तुम्हारे परिवार में पितरों की समस्या है उनके बिना शान्ती के कुछ भी नहीं प्राप्त कर पाओगे। फिर मित्र ने प्रयोग छोड़ दिया। अब वे पितर शान्ती प्रयोग कर रहें है। पितरों के प्रयोग पितर प्रकरण में दे दिया गया है।हनुमान जी के प्रयोग से सर्व कार्य सिद्ध होतें हैं । चाहे व चालीसा हो,अष्टक हो,बजरंग बाण व सुन्दर काण्ड आदि ।

बीर हनुमत शाबर मंत्र

ऊँ नमो आदेश गुरु का बीरबली हनुमन्त जी मुगदर दाहिने हाथ।मारमार पछाड़िये पर्वत बायें हाथ।।
भूत प्रेत अरु डाकिनी जिन्द खबीस मशान।बचै न इनमें इकहू निरंकार की आन।।
दुहाई अन्जनी की। दुहाई राजा रामचन्द्र। दुहाई लक्ष्मण यती।
मेरी भक्ती गुरु की शक्ती। फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।।

विशेष-बजरंग बाण भी भूत प्रेत आदि के लिये अचूक है।

वर्षा रोकना

हमारे एक सहयोगी को मैने हनुमान जी का प्रयोग बताया जिससे शादी विवाह के समय किसी वृहद भोज के समय या किसी पूजन पण्डाल में वर्षा को रोककर कार्य को सुचारु ढंग से किया जा सकता है। वर्तमान गुरुजी जब भी मिलते है यही कहते है यादव तंत्र मंत्र करो और वेद पुराण शास्त्र पढ़ो। एक को किया जाता है और दूसरे को समझा जाता है। मित्र ने एक रिश्तेदार की लड़की की शादी पर आजमाया पूरे गाँव में भयंकर वर्षा हुई और जहाँ शादी प्रयोजन था वहाँ नाममात्र की बूदां बादी।

मंत्र

ऊँ नमो हनुमत बीर अन्जनी पवन देवता की आण जह ऐसी मेघ मण्डली वर्ष सी इत उत फाट फूट सत खण्ड जायसी

वर्षा के समय ७-७ बार जाप करके तीन ताली बजाना चाहिये फिर आकाश की ओर मुख करके फूंक दे। मंत्र पढ़ते हुये झाडू से बरसात के पानी को बहारकर झाडू खड़ा कर दे वर्षा बन्द हो जायेगी या होगी भी तो नाम मात्र की। कार्य प्रभावित नही होगा। फालतू कार्य या परीक्षण के लिये न करें नहीं तो संकट झेलने के लिये तैयार रहें।

चूहा भगाना

हमारे एक मित्र के घर व खेत में चूहों की संख्या बढ़ गई थी। इस प्रयोग से चूहे सदैव के लिये चले गये। मरे व्यक्तिगत घर में चूहों की संख्या अधिक है। उन्होनें फ्रीज कूलर आदि को बर्बाद कर दियें हैं इसी प्रयोग से वे शान्त रहते हैं। नुकसान तो नहीं करते परन्तु घर से गये नहीं हैं कारण दूसरा हो सकता है।

मंत्र

पीत पीताम्बर मूसा गाँधी ले जाऊ हनुमन्त तू बाँधी ।
ए हनुमन्त लंका के राऊ एहि कोण पै सेहू एहि कोणे जाऊ।।

शुद्ध होकर ५ हल्दी की गाँठ और अक्षत मंत्र पढ़कर चूहों के जगह रखें। गणेश जी से प्रार्थना करके उनको एक लड्डू व दूर्वा प्रदान करें कल्याण होगा। मेरे एक मित्र मंत्र से बवासीर ठीक करते हैं जो हनुमत मंत्र है पता नहीं कहाँ से प्राप्त किये

है। मैंने उन्हीं मंत्रो को लिखा है या तो मैंने स्वयं किया है या तो अपने लोगों से करवाया है। किसी दूसरे का नहीं। अन्याय नहीं कर सकता कि जिसका भी मंत्र पाया लिख दिया कि मैंने किया है या कराया है। स्वयं बनाओं स्वयं खाओ अन्यथा संग्रहणी व पेचिस से ग्रस्त हो जाओगे। चूहो को दूसरों के खेत में भेजकर फसल नष्ट कराने का मंत्र भी मेरे पास है। अपने ही बाल से सर्प बनाकर शत्रु को मारने का मंत्र भी है पर मेरी रुचि इनमें नहीं है। जितने समय श्रम से आप दूसरे का नुकसान करेंगे उतने समय में आप निर्माण कर लेंगे और प्रकृति के विधान में दोषी भी नहीं होंगे। अच्छा सोचेंगे तो अच्छा करोगे अच्छा करोगे तो सबका कल्याण होगा।

विशेष प्रयोग

मेरे पास एक महिला आई जिसका पति घर से ६ साल पूर्व चला गया था। एक प्रयोग बताया सफल नहीं हुआ दूसरे.... चौथे बार भी सफलता नहीं मिली कारण यह था कि वह एकदम पढ़ी लिखी नहीं थी। समस्या गम्भीर थी हनुमान मंत्र बताना ही बेकार था ।पाँचवे बार मैंने एक यंत्र पकड़ा दिया कहा जाओ दीपक जलाओ और श्री राम जय राम जय जय राम २१ बार पढ़ो यह मैंने पीछा छुड़ाने के लिये ही कहा था। उसने वैसा ही किया १ महीने में ही उसका पति घर आ गया। हनुमान जी के बारे में

सुना है कि वे राम का नाम किसी को नहीं लेने देते है। उसके बदले में मनुष्य की सारी इच्छा पूरी कर देते हैं। वे सब कुछ दे देते हैं पर राम नाम नहीं देते। वे चाहते हैं कि राम मेरे है और किसी के नहीं यही उनकी प्रसिद्ध स्वामी भक्ति है। कथा में मेरी रुचि नहीं है पर प्रकरण ही ऐसा है। एक गरीब व्यक्ति था जिसको समय ही नहीं था कि पूजा पाठ कर सके । जब शौच जाता तभी राम-राम कहता यही उसका बचत का समय था। हनुमान जी उसके पास पहुँचे और एक घूसा लगा दिये कि मेरे प्रभु का स्मरण वह भी ऐसी अवस्था में फिर श्रीराम जी के पास गये देखा तो घूसा श्रीराम जी को लगा था बड़े आश्चर्य में थे हनुमान कि मेरे रहते कौन ऐसा कर सकता है। श्रीराम जी बोले हनुमान तुम्हारे अलावा किसकी हिम्मत है। हनुमान जी लज्जित हो गये बोले प्रभु आपका नाम जो भी लेगा जब भी लेगा जिस भी कामना से लेगा अवश्य पूरी करूँगा। तब से आज तक हनुमान जी भक्तों की कामना पूरी करके श्रीराम जी से अपने अपराध को मुक्त करा रहे हैं।

।।श्री राम जय राम जय जय राम ।।

मैंने भी इसलिये लिख दिया कि प्रभु श्रीराम के नाम से कुछ प्रायश्चित हो जायेगा मेरा।

विशेष- बाबा तुलसीदास जी ने बजरंग बाण जो लिखा है वह

सर्वपयोगी है पर एक विद्वान ने उससे बड़ा बजरंग बाण लिखा है तुरन्त समस्या निवारण व शत्रु निवारण के लिये अचूक है। जिसमें थोड़ा ज्यादा समय लगता है उसको भी देखे या मुझसे प्राप्त कर लें।

अभिचार(मारण)प्रकरण

सर्वप्रथम तो मैं यही कहूगाँ कि किसी भी मानव को इस क्षेत्र में प्रवेश ही नहीं करना चाहिये। मारण चाहे शस्त्र से हो या शास्त्र से मारण ही है दोनो का दण्डविधान निश्चित है।जीवन अमूल्य धरोहर है। इसी से हम इन्द्री सुख प्राप्त करते हैं अगर यही नहीं रहेगा तो हम क्या अनुभव करेंगे। अपंग व्यक्ति कमजोर व्यक्ति जीवन सुख कैसे भोगेगा क्या मूल्य रहेगा जीवन का जिसके लिये देवता भी तरसते है बड़े भाग............गावा। मेरे पास एक ऐसा अपंग व्यक्ति आया जिसने मुझे ५ लाख रुपये देने की बात कहा मात्र इसलिये कि मैं उसे ठीक कर दूं। उसे यह विश्वास था कि उस पर मारण किया गया है। मैंने हामी भी भर दी थी परन्तु संयोग से उसी के गाँव का एक व्यक्ति मिला जिसने मुझे बताया कि उस अपंग ने अपने पैसे व बल के घमण्ड से अपने पड़ोसी के घर में बंधी गायों व अन्य पशुओं को जिन्दा जला दिया था। उसके कुछ ही दिन में उसकी यह दशा हो गई थी। मैंने विचार त्याग दिया। धन्यबाद देता हूँ उस व्यक्ति को जिसने

अवगत कराया था अन्यथा मैं भी उसकी सहायता के चक्कर में दोषी हो जाता । मारना चाहे जिस विधि से हो मारना ही है। बचाव का कोई आधार नहीं है। मेरे एक सहयोगी चुनाव में ३ बार हारने के बाद मुझसे मारण का निवेदन करने लगे मैंने उनका सहयोग भी किया कुछ श्मशानी क्रिया करवा के उस शत्रु को परास्त करवाया । जबकि हकीकत यह थी कि हमारा पक्ष ही दोषी था फिर भी मोह तो विनाश का आधार है। सीता को सोने के मृग का मोह हुआ परिणाम आप जानते ही हैं। धृतराष्ट्र को दुर्योधन से मोह था पूरा विश्व जानता है क्या लिखूं। कुछ सामग्री ऐसी थी जिसका जमीन से निकालना आवश्यक था पर उस मित्र को मोह था कि निकलते ही शत्रु इन पर हावी न हो जाये लालची व्यक्ति कामी व्यक्ति किसी की परवाह नहीं करता। मुझे डर था कि सामान न निकलने से वह व्यक्ति कहीं विक्षिप्त न हो जाये । ग्राम पंचायत चुनाव के बाद भी मेरे मित्र ने यह कहकर टाल दिया कि बी०डी०सी० चुनाव जीत लूँ वह भी जीत गये फिर निवेदन किया मैंने तो टाल गये बोले ब्लाक प्रमुख अपने हो जायें तो निकाल लूगाँ वह भी जीत गये। फिर मैंने कहा मित्र अब तो सम्पूर्ण हो गया बोले रहने देते है क्या नुकसान है अपना जिसका होगा उसका होगा। मैं गुस्से में लाल हो गया पर क्या करता उस समय मैंने कामकला

काली साधना सुना भी नहीं था। कायर पुरुष की भांति घर चला आया। अगर आज की तरह समर्थ होता तो कामकला काली मंत्रो से उनके सारे भाग्य के फलों को ध्वस्त कर देता या तो उस व्यक्ति में जोड़ देता । मैंने स्वयं भी उनके चुनाव के लिये कुछ साधना किया था याद नहीं पर स्वप्न में किसी इष्ट ने आश्वस्त किया था कि जीत तुम्हारी ही होगी। मेरी बात की अवमानना करने का परिणाम यह रहा कि उनके एक पुत्र की आँख बिना किसी कारण खराब हो गई जिसकी उम्र उस समय ८ या १० साल रही होगी। चुनाव आया गया उसकी भरपाई हो गई पर उस लड़के की आँख वापस नहीं आई इतना भारी मूल्य चुकाना पड़ा उस मारण का पर धन लोलुपों को धन से मतलब है। बच्चे पत्नी माता पिता सुखी हो हंसते खेलते रहें नमक रोटी ही मिले इससे बड़ा धन क्या चाहिये। ऐसे बहुत लोंग है जो गुस्से में अपनी झूठी मर्यादा के लिये मारण करते या करवाते हैं पर पाते कुछ भी नहीं हैं सिर्फ खोते हैं। अब आता हूँ दूसरे पक्ष पर अगर शत्रु लाख समझाने पर नहीं मानता है जान इज्जत घर ले लिया हो या लेने पर उतारु हो तो कर लेना चाहिये पर समर्थ गुरु के निर्देशन में वह भी एकान्त शिव मंन्दिर में पूरे विधान के साथ आधे अधूरे करने पर अपना ही नुकसान होता है। अन्य प्रयोगों की भांति इसमें छूट नहीं

है मरोगे या तो मारोगे आमने सामने की बात है मजाक नहीं है। मैंने एक बार एक व्यक्ति के द्वारा काफी नुकसान करने पर भगवान शिव के अवतार पक्षीराज शरभ आकाश भैरव का प्रयोग किया था जो २४ घण्टे में परिणाम प्राप्त करा देता है। विधि विधान के अभाव में परिणाम ५० प्रतिशत रहा । जितना मेरा नुकसान हुआ था उतना शत्रुओं का भी पर प्रयोग अन्तिम विकल्प के रुप में जाना जाता है। वर्तमान गुरु जी ने मना कर दिया जबकि मेरी इच्छा पुनः करने की थी। दैनिक पूजा से ही शत्रु रोग ऋण का शमन हो जाता है। घबड़ाये नहीं कर्मभोग भी तो भुगतना पड़ता है।हम अपने कर्म से दुखी होते हैं उनका निरीक्षण नहीं करते फिर गलती करते हैं उसको रोकने का फिर नया कर्म फिर भार बढ़ जाता है। अगर हमें कुछ समस्या है तो यह देखें कि कहाँ से है न समझें तो गुणीजन से सम्पर्क करें उतावलेपन में मारण आदि कर्म न अपनाये नहीं तो दूसरी समस्या आ जायेगी उसका मारण करेंगे तो तीसरी आ जायेगी आप जिन्दगी भर इसी में उलझ जायेंगे । इसलिये प्रकृति के बनाये नियमों पर चलने का प्रयास करें। प्रकृति समस्या देती है तो निवारण का मार्ग भी देती है पर हम घबड़ाकर स्वयं मार्ग चुनते हैं और अपना नुकसान कर बैठते है। अगर कुछ समझ न आये तो एक माध्यम अपनाकर यात्रा आरम्भ कर दे

देर सबेर रास्ता निकल आयेगा।

अन्यत्र

हमारे पड़ोसी ने शत्रुओं से तंग आकर कुछ श्मशान सम्बन्धी प्रयोग किया जिसके फलस्वरुप उनका शमन हो गया पर अंतिम काल में स्वयं भी कष्ट भोगते रहे। स्थिति विपरीत हो गई जो आज भी है पर मानव पिछले कर्मो को विस्मृत कर देता है । और नये समस्याओं का साधन खोजता है। श्मशान कर्म करने से उस मनुष्य की आत्मा जो आपका मारण कर्म करती है यहीं फस जाती है अगर आप मुक्त नहीं करते तो वही बाद में प्रेत बाधा या पितरबाधा हो जाती है जिसको खोजना असम्भव हो जाता है और परिवार नाना प्रकार के विपत्तियों में फँस जाता है इसलिये यह ध्यान रहे आग जलाकर उसको शीतल करना आना चाहिये। अन्यथा आपका सर्वस्व स्वाहा हो जायेगा और आप और आगामी पीढ़ी ओझा सोखा त्रांतिक मांत्रिक के चक्कर में बरबाद हो जायेगा क्योकिं इसको बता पाना किसी के लिये सम्भव नहीं होगा। इसलिये ध्यान रहे श्मशान की कोई भी चीज कब्रिस्तान की मिट्टी आदि किसी भी प्रकार घर में न पहुँचे अन्यथा सोच लें इसलिये शवदाह के बाद विधिवत स्नान का नियम है आज नये लोग पुराने नियम छोड़ रहे हैं और परेशान हो रहें हैं। बस यहीतक अन्यथा प्रकरण बढ़ जायेगा।

अप्सरा(नायिका)प्रकरण

अप्सराओं के बारे में अच्छा और बुरा दोनो सुना है। पुराने आचार्य मानते हैं कि विश्वामित्र व मेनका के संसर्ग से या किसी अन्य अप्सरा से एक पुत्र या पुत्री पैदा हुये थे। जिन्होने मेरे देश का नाम व मान बढ़ाया । एक अन्य ॠषि द्वारा किसी अप्सरा के सम्बन्ध से कालयवन पैदा हुआ जिससे आगे चलकर यवनों का वर्चस्व बढ़ा जो कि अमर था। कृष्ण ने मुचुकन्द के द्वारा उसको जलवाया था ।उस ॠषि व अप्सरा का नाम मुझे नहीं मालूम है। यवन(मुस्लिम) भी हिन्दू से ही उत्पन्न हैं। यहाँ मैं जाति धर्म की बात नहीं कर रहा हूँ। मैंने सुना है कि किसी जगह यवन भी शिवलिंग की पूजा करते हैं। अप्सरायें लक्ष्मी की बहनें है इसलिये विष्णुदेव की विशेष कृपा पात्र है। स्वर्ग में इनको विशेष स्थान प्राप्त है।स्वयं महाबीर हनुमान जी की माता भी अप्सरा ही थी। अप्सराओं का चरित्र बहुत उत्तम है। अगर ऐसा नहीं होता तो स्वयं शिव अवतार से कैसे जन्म लेते। देवनगरी में आमोद-प्रमोद मनोरंजन करना इनका मुख्य कार्य है। कहीं ये गन्धर्वो की पत्नी है तो कहीं पुत्री । इसलिये इनको साधने वालो को चरित्रवान होना आवश्यक है। इनका निवास स्थान जलाशय माना गया है। घर में कृत्रिम झरना या पानी का जलाशय बनाकर साधना करने से प्रसन्नता में सहायता मिलती है।

सुन्दर पुष्प बगीचा सौन्दर्य वाली वस्तुयें इन्हें प्रिय हैं। इनको प्रसन्न करना हर व्यक्ति के वश की बात नहीं है। हमारे ऐतिहासिक प्रसिद्ध कवि कालीदास इनके कृपापात्र रहें हैं तो स्वयं उज्जैन नरेश भी। सिंहासन बत्तीसी नामक कथा भी इन्हीं अप्सराओं से जुड़ी है ऐसा माना जाता है कि सिंहासन बत्तीसी में लगी बत्तीस पुतलिया अप्सराएं ही थी। ऐसी इनकी महिमा रही है कि कई देव दानव मानव इनकी कृपा से बहुत कुछ कर गये जो अकेले उनसे सम्भव नहीं था। मानव की तो इन्होंने बहुत सहायता की है पर उनकी जो क्षमावान दयावान व पुरुषार्थी थे। कामी व लोलुप पुरुषों को इनका सानिध्य पाना असम्भव है। वर्तमान में कई घटिया व्यवसायिक तांत्रिको ने इनका ऐसा रुप वर्णन किया है जिनसे इनका कोई लेना देना ही नहीं है। प्रसिद्ध खजुराहो की कलायें भी इन्हीं का स्मरण दिलाती हैं। एक बार की बात हैं मैं कहीं से आ रहा था स्टेशन पर एक पत्रिका दिखी जिसके ऊपर एक खूबसूरत स्त्री का चित्र बना था। अप्सरा से मेरा पहला परिचय था पत्रिका घर ले आया। उसमें अप्सरा को प्राप्त करने का बहुत सरल विधान लिखा था। गुरु जी जो पत्रिका निकालते थे उनके बारे में भी बहुत कुछ। मैने कार्यालय से सम्पर्क किया तो साधना के लिये कुछ सामग्री भी आ गई। अब मैं अप्सरा के चक्कर में पड़ गया। एक बार किया नहीं हुआ तो फिर सामग्री

मंगवाया फिर किया। इस तरह से मेरा काफी पैसा खर्च हुआ। फिर मैंने सोचा मेरे में ही कुछ कमी है। बाद में ठीक हो जायेगी गुरुजी की जितनी भी पुस्तकें थी मैंने सभी मंगवा ली लगभग २०० से ज्यादा रही होगी उन सबका मैंने अध्ययन किया उसमें लिखा था कि गुरुजी सभी देवी देवताओं से मिलने जाते हैं हिमालय योगी हैं रात को हिमालय जाकर वशिष्ठ विश्वामित्र को उचित कार्य निर्देश देते हैं। यक्षिणी अप्सरायें उनके आस पास रहती हैं। मैं प्रसन्न होकर सामग्री मँगाता करता कुछ नहीं होता। इस तरह से मेरा काफी पैसा फसने लगा। मेरा विश्वास था कि गुरुजी प्रसन्न होकर दो चार अप्सराएं दे ही देगें फिर क्या सारे पैसो का हिसाब हो जायेगा। कभी कभी मैं भगवान पर गुस्सा हो जाता कि यदि मैं पहले पैदा हो जाता तो गुरुजी से सारी सिध्दिया व अप्सराएं पहले ही ले लेता। उन गुरुजी के एकाध शिष्य भी मिल गये जो उनके परमभक्त थे। उन्होंने बताया कि गुरुजी ने फला को अप्सरा दे दी है फला को धनवान बना दिया कोई यक्षिणी के साथ रात भर वार्तालाप करता है आदि आदि। मैं गुरुजी की पुरानी पुस्तकें ढूढने लगा काफी दूर तक जाने पर मिल गई। उनको पढ़ा किसी में लिखा था कि २१ बार मात्र मंत्र पढ़ने से अप्सरा आती है। खूब विधिवत बड़ाई थी कि कमर हिलाती आती है आकर गोंद में बैठ जाती है धन स्वर्ण आभूषण रात को छोड़कर वापस

चली जाती है। एक अप्सराके बारे में तो यहाँ तक लिखा था कि इतना सोना देती है कि आदमी को व्यय करने के लिये रास्ता ही नहीं मिलता है। मैंने खूब सामग्री मगाई खूब साधना की। उनके बहुत से शिष्य मेरे दोस्त बन गये थे थपकी देते। यादव प्रयास करो अबकि बाजी मार ले जाओगे। उनके एक शिष्य ने मुझे कुछ मूर्ति माला लाकेट महंगे दाम पर दिया और कहा इस बार तो निश्चित ही अप्सरा आ जायेगी। मैंने कर्ज लेकर पुनः प्रयास किया। गुरुजी व उनके सारे शिष्य मेरे साथ थे। अबकि बार मैं हारना नहीं चाहता था इसलिये पूरे जोर से प्रयास शुरु किया। कभी मेनका का ३१ दिन का अनुष्ठान तो कभी उर्वशी का तो कभी शशिदेब्या का आदि आदि का। इस बार मैं ऐसा पटका खा गया कि मेरी कमर की हड्डी टूट गई। तब जाकर नशा टूटा। बाद में गुरुजी का पता किया तो पता लगा कि गुरुजी इतने चरित्रवान थे कि राजधानी (भारत की) किसी महिला से छेड़छाड़ करने पर सरेराह महिलाओं ने जूती चप्पलों से उनका स्वागत किया था। हाईकोर्ट ने उनको विदेशी महिला से छेड़छाड़ व उसका बहुत काफी पैसा गुमराह करने के कारण सजा भी मिली थी। उनके शिष्य के बारे में पता लगा कि मेरे पड़ोसी जिले के थे आवारा होने के कारण घर वाले उनको भगा दिये थे वह भागकर किसी की परित्त्यक्ता पत्नी व बच्चियों से शादी

करके तंत्र मंत्र का धंधा चला रहे थे। मेरी भी अप्सराओं के चक्कर में आदत बिगड़ गई है जब भी कहीं बाहर जाता हूँ पत्नी के साथ तो सुन्दर स्त्री देखकर पता करने लगता हूँ कि कहीं ये मेरी साधना के समय वाली उर्वशी मेनका तो प्रकट नहीं हो गई पत्नी के क्रोध का भाजन बनना पड़ता है। एक दो बार इन अप्सराओं के चक्कर में परेशनी भी मोल लेनी पड़ी है। मैं तो किसी जन्म के कर्म से बाहर आ गया पर न जाने कितने साधक इस चक्कर में बरबाद हो गये न घर के रहे न घाट के। सुना था कि किसी के ९९९ पानी के जहाज डूब गये मेरे पास तो कुछ था ही नहीं जिसने स्त्री को समझा है वह किसी न किसी क्षेत्र में महान हो गये पर उनको समझना थोड़ा मुश्किल है।

सकरात्मक पहलू

उचित जगह उत्तम चरित्र उचित पारिवारिक पृष्ठभूमि में ये प्रकट होती है। अपने साधक को आवश्यकतानुसार सहायता करती हैं। इनको माता बहन प्रेमिका और पत्नी के रुप में ग्रहण करना पड़ता है। माता के रुप में इनका प्रभाव नहीं आता जैसे किसी शहरी बूढ़ी औरत को भी भाभी कहना पड़ता है। भूल से भी आपने माता कह दिया तो खैर नहीं। बहन के रुप में ये लज्जित हो जाती है क्योंकिं इनका इस रुप से कोई सरोकार नहीं है। पत्नी रुप में होने से ये सब कुछ प्रदान कर देतीं है पर आपको पुरुष

बनना पड़ता है। टेड़े मेड़े आदमी चश्मा ऊपर नीचे करने वाले पिचके गालों वालो को यह भयंकर पीड़ा देती है। क्योकिं ऐसा पति कौन चाहेगा पर मंत्र के बल से बंधी रहती है। इसलिये उपद्रव भी खूब करती है। बिना गणेश सिद्धी कामकाली सिद्धी विष्णु सिद्धी या समर्थ देव सिद्धी के परिणाम विपरीत ही रहता है। मेरे स्वयं के साथ भी एक अप्सरा जो अप्सराओं में प्रथम है लम्बे समय तक रही है उसने तंत्र के मार्ग में काफी मदद किया है। पर यह साधना मैंने गणपति वीर के कठिन अनुष्ठान व माँ भगवती लक्ष्मी के साक्षात दर्शन लाभ के बाद की है। फिर स्त्री तो स्त्री है स्त्रियों के चरित्र से सभी परिचित है। जब भी मैं असावधान हो जाता तो बिना कारण के स्वयं के पत्नी को कष्ट देती यो कभी कभार तो मारपीट कर देती। जब वह इस रुप में प्रकट होती तो १०-१२ फुट के स्त्री के रुप में अपने चेहरे को ढकी रहती थी और घर में प्रवेश करती तो झुककर ही क्योकिं इतना बड़ा दरवाजा कौन बनवाता है। इनकी साधना से पहले स्वयं को परख लें तब हाथ डाले। स्त्री का चरित्र और मनुष्य का भाग्य कौन जान पाया है। बिना विवाह वाले पुरुष उपरोक्त गुणों को प्राप्त करके प्रेमिका रुप में साधना करेगें तो उत्तम फल की प्राप्ति होगी। शादी वाले न करें तो ठीक रहेगा। क्योकिं एक म्यान मे दो तलवार नहीं रहेगी। आप हमसे ज्यादा

समझदार हैं। मंत्र महार्णव में इनके आश्चर्यजनक प्रयोग हैं। मैंने शावर पद्धति से साधना की थी । मेरी शावर में रुचि है।

मंत्र

इनकी साधना करने के लिये अच्छे पुष्प,धूप,सुगन्धित दीपक(चमेली तेल का) या जिसमें इत्र व घी मिला हो नैवेद में गरी व मिसरी रखना अनिवार्य है। गुलाबजल से अपने व स्थान को शुद्ध करें अगर तांत्रिक पद्धति से कर रहे हैं तो भूतडामर महामंत्र का(नायिका कवच या स्तोत्र) एक बार पाठ शुरु में और एक बार अन्त में करें। शाबर पद्धति से पूजन का विधान(शाबर पूजा प्रकरण) में दिया गया है जो समस्त शाबरी मंत्र के लिये अनिवार्य है। वस्त्र साफ हो चाहे जो भी हो।

" बास वरहा देहु गिराई डाइन बान्हो पाहुँच लाई
जाय करौ मैं दुर्गा माई,गाढ़े दुर्गा होहु सहाई
ओढ़वुल फूल फूले टहकार ताहां सम्मे करें सिंगार
मारे मारे कहे निर्मल पल्हार
कै परी लवंग परी फूल परी तक्षक परी दरवानी परी
नूड परी शीत परी जहूर परी की बन्दौं पाँव ईश्वर
महादेव गौरा पारवती की दोहाई सिद्ध गुरु की बन्दगी मंत्र
पूर भूत प्रेत टोना छूटे जरुर ।।

विशेष- श्वेत वस्त्र समय रात्री में ७ ओड़वुल का फूल सामने

रखना जरुरी है। हो सके तो वृहस्पतिवार या शुक्रवार से शुरु करें ४० दिन में एक प्रयोग पूरा होता है। मात्रा अपने क्षमता से निर्मित कर लें। यह मंत्र प्रकाशित भी है तथा मेरे गुरुदेव श्री अरुण कुमार मिश्रा जी के संग्रह में सुरक्षित भी।

स्वप्न विद्या प्रकरण

सपनों के बारे में वेद पुराण रामचरितमानस आदि में वृहद लिखा गया है। हमारे देवी देवता पितर अपने कृपापात्रों को सपनों के माध्यम से अच्छा खराब संकेत करते हैं। ज्यादातर कहानियाँ सपनों से जुड़ी है कि अमुक देवता ने ऐसा मंदिर बनाने को कहा है। यहाँ कहा है वहाँ कहा है ऐसा करो वैसा करो आदि। सपनों का संसार विचित्र है। सपनों के माध्यम से कार्य करके बहुत आबाद हो गये तो बहुत बरबाद । अपने कुलदेव कुलदेवी पितर इष्टदेव,भूत प्रेत आदि द्वारा अपने अपने क्षमतानुसार अपने साधकों को उनकी समस्याएं व निवारण बताने के भी प्रमाण उपलब्ध होते हैं। मानव पूर्वजन्म कृत कर्मो से भी अच्छा व बुरा सपने देखता है। एक एक दिन से लेकर सौ-सौ साल तक का मानव सपने देखता है व स्वयं ही उसके बारे में विचार करता है। सपनों की कुछ ऐसी ही विशेषता है कि करीब-करीब हर मानव से सामंजस्य रखती है। बस स्थान व अवस्था

बदल जाती है। मैनें स्वयं भी इसके माध्यम से भूत भविष्य वर्तमान की घटना का अभ्यास व आभास किया है ऐसा आपके साथ हुआ होगा और सबके साथ भी मेरे जीवन में सपनों का महत्व अधिक रहा है। वह भी तंत्र जीवन में ज्यादातर सिद्धियों में सपनों का आधार होता है। प्रत्यक्षीकरण तो विरले को होता है। मैं सपनों पर वृहृद विचार लिखना चाहता था । मिलती जुलती विचार धारा व प्रयोग मुझे पसन्द नहीं है जो भी साधकों को दिया जाय वह शुद्ध व तर्क संगत न्याय संगत हो। मैंने अपने जीवन में भी तांत्रिक मान्त्रिक शावरी सपनों के प्रयोगों का परीक्षण किया है। उसमें से मुझे जो प्रमाणित लगे जिनका परिणाम मेरे सामने आया उनको ही लिख रहा हूँ। ऐसे प्रयोगों की संख्या अनगिनत है। जो ग्रंथों में भरे पटे हैं।

स्वप्न वराही विद्या

इस मंत्र को खा पीकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जब सोने जाय तो खाट या चौकी पर बैठकर सोने के जगह(पूजा घर में नहीं)मात्र १०० बार जाप करे। आपके प्रशन का उत्तर अवश्य मिलेगा। किसी प्रकार के विधि विधान की जरुरत नहीं है। किसी को एक दिन में किसी को चार तो किसी को आठ दिन में उत्तर मिल जाता है। पूरा विधान तो ग्यारह दिन का है पर मेरे विचार से जब तक स्पष्ट उत्तर न मिलें तब तक करना चाहिये। मैनें इसको

चार बार किया है पर ग्यारह दिन के पहले ही बाधा आ जाती और पूरा नहीं कर पाता परन्तु आभास हो जाता।

मंत्र

" ॐ हीम नमो वाराही अघोरे स्वप्नं दर्शय २
ठःठःठः स्वाहा "

यह मंत्र कई ग्रन्थों में कई प्रकार से आया है। यहाँ पूरा मंत्र लिख दिया गया है। भ्रमित होने की जरुरत नहीं है।

स्वप्नमातंगी विद्या

यह मंत्र बिना खाये पीये(पूर्ण उपवास करके) रात्रि के समय १०८ बार मंत्र जाप करने से उसी रात प्रश्न का उत्तर निश्चित मिल जाता है कई दिन नहीं करना पड़ता है। मैं खा पीकर इसका प्रयोग करता देरी तो होती पर उत्तर मिल जाता विधान की अपनी मर्यादा है करें।

मंत्र

" ॐ नमः स्वप्नमातंगीनी सत्यभाषिणी स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा "

घंण्टाकरणी स्वप्नेश्वरी यक्षिणी विद्या

इस मंत्र विधान को मैं लिखना नहीं चाहता था पर रोक नहीं सका क्योकिं स्वप्न के लिये यह सरल व अचूक साधना है। इतनी सरल साधना पूरे तंत्र जगत में नहीं होगी ऐसा मुझे विश्वास

है। जहाँ तक मेरे अध्ययन की क्षमता है परीक्षित है।

मंत्र

" ऊँ नमो यक्षिणी आकर्षिणी घंण्टाकरणी
महापिशाचनी मम् स्वप्ने दर्शनं देहि देहि स्वाहा "

विधि

सोते समय खाट पर बैठकर मात्र २१ बार पढ़ना चाहिये फिर बिना कुछ बोले सो जाना चाहिये फिर सुबह खाट पर बैठे ही २१ बार पढ़ना चाहिये तभी खाट पर से उतरे व बोलें। ऐसा २१ दिन करने से व्यक्ति काल ज्ञान का महारथी हो जाता है। फिर जब समस्या आये तो मात्र ११ बार पढ़कर उत्तर प्राप्त किया जा सकता है। सम्भव हो तो ब्रह्मचर्य शुद्ध भोजन व दरी विछाकर जमीन पर सोना चाहिये। कुछ अन्य यक्षिणी पर मैंने कार्य किया है उनका फल अच्छा मिलता है पर उनको साधने के लिये कुछ पौधों की जड़ या फल की जरुरत होती है इसलिये मैनें नहीं लिखा है। एक प्रयोग ही पर्याप्त है। सब प्रयोग करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

काली स्वप्न विद्या(शाबर पद्धति)

यह प्रयोग है वह स्वप्न ही नहीं समस्त कार्य के लिये उपयोगी है। धरती के सारे कार्य इससे किये जा सकतें है पर मैनें इसका

प्रयोग खोये लोगों के लिये ही किया है। मेरे द्वारा बताने पर एक मित्र ने इसका प्रयोग लगभग एक साल तक किया था उनका उद्देश्य भूत प्रेत से जुड़ा था इसलिये आगे नहीं लिख रहा हूँ यह मेरा क्षेत्र नहीं है। यह सरल और आश्चर्य जनक फल देने वाला योग है। करें फिर बतायें।

मंत्र

"चेत माई चेत माई कालिका
चेतावें तेरा बालका सोते को जगा जागते को बैठा
"अमुक बात बता"दुहाई गुरु गोरखनाथ की
नाथ जी का आदेश ।।"

विधि

रात के दूसरे पहर यानि ९ या १० बजे के बाद घी का दीपक जलाकर तब तक जपे जब तक नींद न आ जाय। गिनती व पूजा विधान जरुरी नहीं है। आप चाहे तो काली के चित्र का पूजा करके अगरबत्ती,कपूर,पुष्प,जायफल,नीबू,लवंग आदि चढ़ायें आवश्यक नहीं है। वैसे यह सिद्ध मंत्र है। पहले दिन ही कार्य कर देता है पर अधिकाधिक तीन दिन में तो निश्चित ही गाय का घी सम्भव हो तो प्रयोग करें वह भी काली गाय का ।अगर तीन दिन में भी सफलता न मिले तो प्रयोग जारी रखें विश्वास रखें सफलता मिलेगी ।

सट्टा के लिये

मंत्र व विधान वही रहेगा बस "अमुक बात बता" की जगह "सट्टे का नम्बर आने का बता" हो जायेगा ।

गये मानव व पशु के लिये

" रुठे को मना फलाने फलानी को घर पहुँचा" अगर लड़का या पुरुष घर से भागा है तो फलाने के जगह उनका नाम होगा फलानी नहीं बोला जायेगा। अगर लड़की या स्त्री गई है तो फलाने हटाकर उसका नाम लिया जायेगा। शेष मंत्र पूर्ववत रहेगा। फलाने नहीं बोला जायेगा ।

चोरी का पता लगाने हेतु

"चोरों का नाम पता बता"

धन प्राप्ति के लिये

"चोरी का माल बरामद करा"

मन की बात

"मन की सारी बात बता"

देवी देवता के दर्शन के लिये

"मुझे अमुक अमुकी देवी देवता का दर्शन करा"

गड़ा धन के लिये

"गड़ा धन का पता बता व प्राप्त करा"

अन्य कार्य

"मेरे लड़का लड़की की शादी करा" "मेरे लड़का लड़की की नौकरी लगा" "अमुक को मुझसे मिला" "मेरा व्यापार चला" "अमुक शत्रु का नुकासान करा" आदि जोड़ा जायेगा। कामना के हिसाब से जोड़ ले ।

भूत प्रेत के लिये

आगर आपको लगता है कि कोई बाधा से ग्रसित है तो सामने बैठाकर मंत्र जाप करने से वह सारी बात बता देगा कहाँ से आया है क्या चाहता है कैसे जायेगा आदि ।

मंत्र

"भूत प्रेत को पकड़ ला सिर चढ़ खेला-मुख से बुला" यह जोड़ दिया जायेगा मंत्र में ।

सावधानी

भूत प्रेत कार्य स्वयं समर्थ होने पर या योग्य गुरु के निर्देशन में करे नहीं तो कोई नहीं है टक्कर में क्यों पड़े हो चक्कर में कह उठेगें।भूत प्रेत। और आप अपना सर्वनाश कर बैठेगें ।

विशेष

"मेरा गया धन वापस करा""अमुक को घर से दूर भगा""अमुक से मेरा पीछा छुड़ा""अमुक अमुक में कलह करा""अमुक से मेरा कार्य करा""मेरा सब काम करा या बना""मेरे घर को बला को दूर भगा"आदि आदि जोड़ा जा सकता है या अमुक रोग से मुक्त करा या सर्व रोग से निजात दिला या जो भी उपर्युक्त लगे।

बीर हमजाद या शहजाद(छाया पुरुष)प्रकरण

वैसे तो पूरा का पूरा शाबर तंत्र ही मिश्रित है हिन्दी संस्कृत और उर्दू के शब्दों का मिश्रण भी पर्याप्त है। मैनें बहुत सारी शाबर साधनाओं को देखा व परखा है। इनमें से हमजाद व परी(यक्षिणी) साधना पूरी की पूरी मिश्रित है। हिन्दू एवं मुस्लिम शब्दों का संयोग है। यही दोनो साधनायें मस्तिष्क को भ्रमित करती है। हमजाद को ही कहीं कहीं शहजाद कहा गया है। हिन्दू धर्म में इसी को छायापुरुष बीर के नाम से जाना गया है। हिन्दू व मुस्लिम तंत्र में इनके के बारे में इतना लिखा गया है कि एक व्यक्ति के लिये पढ़ना व जानकारी करना कठिन ही नहीं असम्भव है। इनको प्रसन्न करने की हजारों विधियां है। करीब करीब सौ सवा सौ विधान मैनें भी आजमाया है पर सफलता एक दो विधि से ही मिली है। दर्पण विधि,दीपक विधि,छाया विधि,मंत्र विधि से इनको साधने के प्रमाण मिलते है। कहीं कहीं तो नग्न होकर जल में अपनी

छाया देखकर,चन्द्रमा के प्रकाश,सूर्य प्रकाश में खड़े होकर साधन का विधान मैनें पढ़ा है। षटकर्म (वशीकरण,मारण,उच्चाटन) आदि भी इनकी कृपा से सिद्ध होते हैं। दुनिया के समस्त लौकिक कार्य इसकी कृपा से बड़ी आसानी से हो जाते हैं जिसके लिये मानव को काफी परिश्रम व व्यय करना पड़ता हैं। इसके बारे में सुना व अनुभव किया जाता है कि यह सदैव साथ रहता है क्योकिं यह अपनी ही छाया होती है। अलग होने का सवाल नही है। ऐसा भी तांत्रिक मानते हैं कि यह भूत प्रेत पिशाच देवी देवता नहीं है बल्कि अपनी ही आन्तरिक शक्ति है। जो इस विधि से बाहर आकर कार्य करती है। अतः ऐसा भी होता है कि आदमी बाहर से नहीं अन्दर से डरता है। इसकी(साधना) अधिकतर अच्छा ही होती है परन्तु मानव अपने ही कर्मो से ही परेशानी मोल लेता है। कभी-कभी पूर्वजन्म में किये गये कार्य भी साधना से प्रभावित होकर इस जन्म में सहायक बनते हैं। जब हमजाद का पूर्ण प्रत्यक्षीकरण होता है तो वह घोड़े पर(श्वेत) सवार और हजार हाथो वाला होता है। जिसका निवास एक पथरीली गुफा होती है। साधारणतया श्वेतधारी दाढ़ी वाल युक्त सन्यासी के रुप में ही प्रकट होता है। घोड़े पर सवारी के समय अस्त्र के रुप में नंगी तलवार लिये रहता है(**ऐसे रुप को मैंने अनगिनत बार देखा है।**)किसी भी लोक से कोई वस्तु या जानकारी रोग निवारण,शत्रु निवारण या गड़ा धन दिखाना प्राप्त कराना

सामान्य बात है। इसके लिये कोई भी समस्या नहीं है। जैसे बच्चों के लिये खिलौना होता है वैसे इसके लिये संसारिक कामनायें। मेरे साथ भी लम्बे समय तक लगभग ५ या ६ साल तक मेरा छाया पुरुष साथ रहा है। मैं उससे केवल भूत,भविष्य,वर्तमान की जानकारी लेता। देवी देवताओं के लोक में जाना मनुष्य के बारे में जानना मेरा मुख्य कार्य था। अन्य प्रायेजन में मैंने इसका प्रयोग नहीं किया है। उस समय मेरी रुचि केवल बीते हुये कल और आने वाले कल के बारे में थी। अस्तुः।

मंत्र

"आगम निगम की खबर लगावे,सोहम् पारब्रह्म को नमस्कार"

सावधानी-१. तांत्रिक साधनात्मक नियमों का पालन करें,भोजन शयन व्यवहार आदि।

२.प्रकट होने पर कुछ बोलना वर्जित है हमजाद जब पूछे तब उत्तर दें। साधना करते रहें।

३.कुछ शर्ते भी रखता है बुद्धि विवेक से काम लें नहीं तो गुलाम बन जायेगें। उचित शर्त ही मानें।

४.गोपनीयता सर्वोपरि है अन्यथा अपना ही नुकसान हो जाता है।

५.अनुचित कार्य न करें न करवायें अन्यथा आपको भ्रष्ट व नष्ट कर देगा।

६.सिद्धी के बाद वह साथ रहने लगता है अतः उस पर नियंत्रण रखें अन्यथा मारे डर के प्राण निकल सकते है। मैं जब नींद में सो जाता तो अचानक हाथ इधर उधर करता तो एक दूसरा पुरुष भी मेरे साथ होता जबकि दरवाजा खिड़की बन्द होता। किसी के आने की सम्भावना ही नहीं थी। यह साधना मैं कामकला काली साधना के साथ करता था। पहले किसी बड़े इष्ट की सिद्धी प्राप्त करके करेंगें तो परिणाम अच्छा रहेगा। उत्तर आत्मबल से ज्यादा सहायता मिलती है।

विशेष- यह जब बहुत प्रसन्न होता है तो कोई निशानी दे देता है जैसे अंगूठी,माला,पुष्प आदि मैंने भी कुछ पाया था ऐसा मुझे याद है।

मंत्र विधि

यह दक्षिण व बाम मार्ग दोनो से सिद्ध होती है। मैं मध्यम मार्ग लिख रहा हूँ। किसी भी दिन शुरु कर सकते हैं पर अच्छे मुहुर्त में करेंगे तो ठीक रहेगा। आसन के लिये पीला वस्त्र उपयोग करें या जैसा भी हो। स्वयं सफेद वस्त्र धारण करें कबीर पंथी लुंगी और टोपी रखें, आवश्यक नहीं है पर करेंगे तो ठीक ही रहेगा। चमेली का तेल ठीक है पर सरसों का तेल भी चलेगा। रात्रि में ११ बजकर ४० मि० से १२ बजकर २० मि० तक साधना शुरु करें। ४० दिन तक २५ माला के हिसाब से जाप करें। श्वेत पुष्प

या माला सुगन्ध वाली धूप गरी मिश्री बताशा लाचीदाना बर्फी पेड़ा का भोग रखें। अनिवार्य नहीं है पर जो हो सके रखें। आसन के ऊपर श्वेत वस्त्र डाल दें अगर हो सके तो पूरे घर (साधना) कक्ष की सफेदी करवा लें। जब यह प्रकट हो जाय तो यह शर्त रख लें"जहाँ भेजूं वहाँ जाओगे जो कहूँगा वो करोगे मेरी आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं करोगे और मेरा नुकसान कभी नहीं करोगे"।

अन्तिम सावधानी

१.जब हमजाद आगे आने लगे तो सावधान हो जायें खतरा कर सकता है।यदि पीछे रहता है तो ठीक रहता है।भरसक साथ रहने से उचित लाभ देता है।

२.जिस सामग्री(बेसन के लड्डू)से कार्य करवायें कार्य होने पर वही भोग देकर संतुष्ट करें।भोग जलाशय के किनारे रखें खायें नहीं।जब आपको इसको मुक्त या शान्त करना हो लड्डू से हवन कर दें सदैव के लिये चला जायेगा फिर कभी नहीं आयेगा चाहे जितनी भी साधना कर लें। सिर पर सफेद टोपी या गमछा अवश्य रखें।

३.अपनी ही मिट्टी व जौ के आटे से पुतली या पुतला बनाकर लाल वस्त्र में लपेटकर गंगा में प्रवाहित कर दें यानि कि विसर्जित कर दें।

४.अपने जीते जी स्वयं का श्राद्ध कर्म व पिण्डदान नारायणी बलि आदि करा लें नहीं तो अचानक मृत्यु के कारण आपकी आत्मा मृम्युलोक में सदैव के लिये फस जायेगी या पितर शान्ती करके जीते ही संतुष्ट हो जाँय।"यह कुण्डलिनी जागरण" की साधना भी कही जाती है।

अन्यत्र

एक साधक जो अपनी कामेच्छा के लिये दूर देश से एक स्त्री इससे मंगाया करता तो उस छाया ने कई बार मना किया लेकिन वह साधक नहीं माना। अपवित्र अवस्था में स्त्री को सुबह होते ही उसके देश छोड़ना पड़ता जो छाया पुरुष के लिये कष्टकर था। स्वयं उस स्त्री ने भी छाया पुरुष से इस समस्या के लिये प्रार्थना की थी। एक दिन साधक दिशा बन्धन करना भूल गया मौका पाकर छाया पुरुष ने उसकी गला दबाकर हत्या कर दी।स्त्री को उसके देश छोड़कर अपने लोक चला गया। अतः मानवीय मर्यादा व कामनाओं का ध्यान रखें। यदि आप इसकी साधना करके दैनिक जीवन में कुछ मंत्र जपते रहेंगे तो बिना मागें ही सब कुछ प्राप्त हो जायेगा जिसकी आपको आवश्यकता होगी या जो आपके लिये कल्याणकारी होगा। बालको की तरह चंन्द्रमा मागोगें तो कुछ हाथ नहीं लगेगा। अगर आपको यह साधना करनी ही है तो ऊपर लिखे पक्ष में ध्यान न दें मात्र कुछ संख्या जैसे २१ या ३१ बार या ५१ बार

रोज जाप करें मंगल होगा । चिन्ता न करें। विधान अति आवश्यक नहीं है। पूर्ण लाभ के लिये विधान अपनायें।

श्री गणपति प्रकरण

श्री गणेश आदि देव हैं। जगतगुरु देवो के देव महादेव और माँ जगतजननी पार्वती की इन पर विशेष अनुकम्पा है। गणेश जी का परिवार सम्पूर्ण विशेषताओं से पूर्ण है। रिद्धी सिद्धी शुभ लाभ इनके परिवार के सदस्य हैं। इनकी कृपा से अष्ट सिद्धी-नव निधि की प्राप्ति होती है। इनको बुद्धि का देवता कहा गया है। इनकी कृपा के बिना बुद्धि का समुचित प्रयोग होना असम्भव है। ऐसा भी सुना जाता है कि शिव जी के विवाह में प्रथम पूजित हुये थे। माँ लक्ष्मी ने इनको अपना दत्तक पुत्र माना है। इसलिये इन पर व इनके साधको पर श्री लक्ष्मी की विशेष कृपा होती है। एक अदना से आदमी से लेकर बहुत बड़े तक इनकी महिमा जानते हैं। पूरा का पूरा महाराष्ट्र इनकी कृपा का गुणगान करता है। वेद पुराण तंत्र खण्ड में इनका विशद वर्णन है। विदेशों में इनकी विशेषताओं पर जितना अध्ययन हुआ है उतना किसी देवता का नही। ये दक्षिण व वाम मार्ग दोनों से पूजित है। ज्यादा लिखना जरुरी नहीं है आगे मैं इनके पूजन विधान का आवश्यक अंग लिख रहा हूँ शेष कहीं से भी प्राप्त कर लें कोई परेशानी नहीं होगी।

मूल मंत्र

" ऊँ गंग गणपतये नमः"

गृहस्थो के लिये ऊँ उच्चारण जरुरी नहीं है यह प्रणव कहा जाता है। इस मंत्र के तांत्रिक व मांत्रिक शाबरी लौकिक प्रयोग मिलते हैं सभी सत्य हैं। विधान पर भ्रमित न हों। मैंने जिस विधि से इनकी कृपा प्राप्त की है वह लिख दिया है। किसी प्रकार से करने से मानव की समस्त कामनायें पूर्ण हो जाती हैं इसमें संन्देह नहीं है।

मंत्र विधान

आह्‌वाहन,आसन देकर पूजन शुरु करे यदि आपको संस्कृत के मंत्रो में कठिनाई हो रही हो तो 'मूल मंत्र' पढ़कर ही सब कुछ करें कोई बात नहीं है। यहाँ एक बात ध्यान दें कि गणपति को दूर्वा लड्डू तथा पका केला अवश्य चढ़ायें इससे आपकी कामना तुरन्त पूरी होगी। दूर्वा चढाने का प्रयोग मैं नीचे दे रहा हूँ । इनकी पूजा में तुलसी दल चढ़ाना वर्जित है।

१.एक बार मंत्र बोल २ दूर्वा चढ़ायें फिर मंत्र बोले २ दूर्वा चढ़ाये ऐसा १० बार करें १० बार में २० दूर्वा हो जायेगी । अन्त में एक दूर्वा दें सब २१ दूर्वा हो जावेगी ।

२. एक एक मंत्र बोलकर १०८ दूर्वा अर्पित करें आपकी कामना गणपति पूरा करेंगें ।

३. एक माला मंत्र जाप करके मूल मंत्र का फिर ७ दूर्वा अर्पित करके प्रणाम करें।तीनों विधान कर सकते है या जो आसान लगे।

विशेष

अढ़वुल(गुड़हल) के १०८ पुष्पों की माला तैयार करें फिर चित्र या विग्रह पर अर्पित कर दें ऐसा पूरे अनुष्ठान में करें। धरती अपनी परिक्रमा करना छोड़ देगी,सूर्य उगना छोड़ देगा,चन्द्रमा अपनी शीतलता छोड़ देगा पर ऐसा नहीं होगा कि श्री गणपति महालक्ष्मी महासरस्वती में से कोई आपके अनुष्ठान काल या अन्तिम दिन में साक्षात दर्शन न दें। यह मैंने स्वयं करके देखा है। अनुष्ठान समाप्त होने पर भी गणेश चौथ बुद्धवार के दिन गुड़हल पुष्प व दूर्वा चढ़ाने का प्रयोग करते रहें मंत्र शक्ति बनी रहेगी। गणेश पूजन के बाद १०८ माला प्रतिदिन करें ऐसा ही ११ दिन या १४ दिन तक करें ऐसा करने में आपको लगभग ५ या ६ घण्टे लग सकते हैं। हो सके तो सवा लाख या उससे ऊपर जाप करें। अगर एक बैठक में न हो सके तो कई बार में कर सकते हैं कोई घबड़ाने की बात नहीं है। वस्त्र आसन लाल रखें। दीपक लगाना नैवेद्य देना पूजन

करना यहाँ देना मात्र पुस्तक बढ़ाना है कहीं से सीख लें या मुझसे पूछ लें। यह सामान्य बात है जो हर साधक जानता है।

सावधानी

एक समय भोजन करें दो समय फलाहार रखें जमीन पर सोये खाने से पहले गाय कुत्ता आदि को अर्पित करें। खाना अपने हाथ से बनायें बनाकर पहले गणपति के सामने रखें फिर गाय आदि को दें फिर स्वयं ग्रहण करें। मन्दिर में कर रहे हो तो गणपति को घी,सिन्दूर देकर गुगुल की धूप दें सम्भव हो तो एक विग्रह घर में रखकर पूजन करें। जब भी कुछ खायें उपरोक्त विधान दें। पेय पदार्थों के लिये नियम नहीं है।

साधना समाप्ति पर हवन,तर्पण,मार्जन,मानव भोज करें न सम्भव हो तो मूल मंत्र की संख्या ही बढ़ा दें व छोटे बच्चों को लड्डू केला खिलाकर किसी असहाय'भिखारी' को दान दक्षिणा दे दें। यदि किसी कारण से सफलता न मिले तो घबराये नहीं ऐसा होगा नहीं पर किसीजन्म के कर्म से यदि बाधा है तो मंत्र का शाप विमोचन कर लें व एकाक्षरी मंत्र(वीज) से न्यास भी करें।

शाप विमोचन मंत्र

"ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं हुं गं ऐं क्रों कीलय कीलय स्वाहा"
मस्तक पर हाथ रखकर तीन बार कहें।

शापोद्धार

ऊँ गं हुं गूं ह्रीं फट् कल्पाधाय नमः स्वाहा ।
ऊँ गंग गणपतये नमः ।

ऊँ गूं सेतवे नमः मुखे(मुख छुये) ऊँ ह्रीं गं महासेतवे नमः कण्ठे (कण्ठ स्पर्श करें) ऊँ अं गं ऐ अं आं इं ईं उं ऊं श्रृं लृं एं ऐं ओं औं अः कं खं गं घं ड़ं चं छं जं झं अं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं ज्ञं ऊँ निर्वाणाय नमः नाभौ(नाभि) स्पर्श करें। ऊँ कामराजाय नमः लिंगें (लिंग का) ऊँ गं महाकुण्डलिन्यै नमःआधारे(गुदा का) ऊँ रां रीं रुं रैं रौं रंः शाकिन्यै नमः मूर्ध्नि(सारे शरीर का) ऊँ ग्लौं गजानन मंत्र शाप मोचय मोचय गं स्वाहां ।

एकाक्षरी विधान

ऊँ गं गुरुभ्यों नमः ऊँ पं परमगुरुभ्यो नमः ऊँ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः ऊँ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः ।

विनियोग

ऊँ अस्य श्री एकाक्षरी गणपति मंत्रस्य गणक श्रृषि निचृद गायत्री छन्दः एकाक्षर गणपति देवता ऊँ गं बीजम् ऊँ आं अः शक्ति ग्लौः कीलकमं मम श्री गणपति प्रसाद सिद्धयर्थे अमुक कार्य(कामना) सफलतार्थं जपे विनियोगः।

ऋस्यादि न्यास कर न्यास

ऊँ गणक श्रृषये नमः शिरसि(सिर स्पर्श करें) ऊँ गां अंगुष्ठाभ्यामं नमः।
ऊँ निचृद गायत्री छन्दसे नमः मुखे(मुख का) ऊँ गीं तर्जनीभ्याम नमः ।
ऊँ एकाक्षर गणपति देवतायै नमः हृदि(हृदय) ऊँ गूं मध्ययाभ्याम नमः ।
ऊँ गं वीजाय नमः गुहये(सर्वागं का) ऊँ गैं अनामिकाभ्याम नमः।
ऊँ आं अः शक्तये नमः पाद्‌योः(पैर का) ऊँ गौं कनिष्ठिकाभ्याम नमः।
ऊँ ग्लौं कीलकाय नमःनाभौ(नाभि) ऊँ गं करतलकर पृष्ठाभ्याम नमः।

ऊँ विनियोग नमःसर्वागें(सर्वांग का)

हृद्‌यादिन्यास

ऊँ गां हृद्‌याय नमः।ऊँ गीं शिरसे स्वाहा।ऊँ गूं शिखायै वषट्। ऊँ गैं कवचाय हुम।ऊँ गौं नेत्रत्रयाय वौषट्।ऊँ गः अस्त्राय फट्।

न्यास पास के किसी विद्वान से सीख लें लिखकर नहीं बताया जा सकता है।

दिशा बन्धन

भूर्भुवःस्वरोम कहकर जल या अक्षत या चुटकी सभी दिशाओं में बजा दें।

यहाँ जो शापविमोचन और न्यास दिया गया है उसको करके मूलमंत्र का पाठ करेंगें तो प्रमाण व परिणाम निश्चित मिलेगा नहीं तो मात्र मूलमंत्र के जाप से भी सर्व कार्य सिद्धी अवश्य होगी। पहले एकाक्षरी न्यास करके भी शाप मोचन कर सकते है।

कामकला काली

यही एक ऐसा विषय है जिस पर मैं कोई विचार नहीं कर रहा हूँ सीधे विषय पर बात कर रहा हूँ। कामकला काली यानि काम की देवी। यही एक देवी है जिसकी उत्पत्ति और अन्त का पता नहीं है। सभी कालीयों में यह मुख्य है। इसका परिवार इतना बड़ा है जिसकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता। शिव के जितने भी रुप है जैसे कालभैरव,आकाश भैरव,संहार भैरव इसके सेवक है। विष्णु के उग्रतम रुप नरसिंह अपने सभी रुपों में आस पास रहते है। कामदेव सभी रुपों में,डाकिनी सभी रुपों में,शक्तियां सभी रुपों में यहाँ तक कि काली,दुर्गा,चामुण्डा आदि इसकी सेविकायें हैं। इनके परिवार की पूजा अर्चना(आवरण पूजा) के बाद ही साधक इनका सानिध्य प्राप्त करता है। बिना गुरु के आवरण पूजा कठिन

ही नहीं असम्भव है। दैनिक आवरण पूजा तो छोड़ दीजिये साधक यदि एक बार भी कर ले जीवन में तो उसका सौभाग्य है। आवरण पूजा और "त्रैलोक्यार्षण कवच" या "त्रैलोक्य मोहन कवच" के लिये "महाकाल संहिता"देखना आवश्यक है। इसका हिन्दी अनुवाद हुआ है जिसमें पहले खण्ड में 'कामकला काली' का विधिवत व विस्तृत वर्णन है परन्तु इसकी पूरी जानकारी के लिये 'महाकाल संहिता' के 'गुह्यकाली' खण्ड देखना जरुरी है जो पाँच भाग में प्रकाशित है। सब मिलाकर ६ खण्ड में महाकाल संहिता देखने पर इसकी जानकारी होती है फिर भी गुरु की आवश्यकता अनिवार्य है। इसमें कुछ ऐसे विषय है जो बिना अनुभवी साधक के समझ में नहीं आते। इसकी महिमा इसी से विख्यात है कि शिव ने कामकला काली को पराजित और नीचा दिखाने के लिये'श्री हनुमान' रुप में अवतरण लिया कामकाली ने इनसे पुत्र उत्पन्न करा दिया। रानी मैनावती ने कामकाली को प्रसन्न करके हनुमान को सेवक बनाया था जो उसके काम पूर्ति के लिये एक पुरुष रोज लाया करते थे और सुबह छोड़ते थे। हनुमान जी का मैं विरोधी नहीं हूँ पर कामकाली का प्रकरण है। इसके साधको में रावण,राम,हनुमान,विश्वामित्र आदि लोग अग्रणी हैं। हनुमान ब्रह्मचारी थे उन्होंने कामकला काली की पूजा कैसे की

होगी स्वयं सोचें परदे की बात है। ५१ भैरव अपने स्त्रियों के साथ नग्न कामक्रीड़ा करते हुये ५१ नरसिंह सपत्नीक काम केलि करते ५१ कामदेव सपत्नीक कामक्रीड़ा में मग्न ५१ डाकिनी ब्रह्मप्रेत आदि से सहवास करते हुये ५१ शक्तिया अपने देवों के साथ ५१ महाविद्यायें अपने -अपने भैरवों के साथ इसके परम आज्ञाकारी सेवक है। जिनका विशेष विवरण'महाकाल' संहिता में देखे। मैं संक्षिप्त व अतिआवश्यक विधान लिख रहा हूँ।

विधान

ऊँ गुं गंरुभ्यो नमः ऊँ गं गणपतये नमः।
ऊँ ब्रह्मायै नमः ऊँ सूर्याय नमः ऊँ विष्णवे नमः ऊँ नमः शिवाय।

आवाहन

ओं ह्रीं क्लीं आं कामकलाकाली देवि आगच्छ २ तिष्ठ २ पूजां गृहाण २ स्वाहा। कुछ गुड़हल का पुष्प अर्पित करें।

पुष्पांजली

क्लीं कामकलाकाल्यै नमः-पुष्प अर्पित करें। फिर मन से अक्षत पुष्प,धूप दीप,नैवेद्य दें मूलमंत्र पढ़कर। यही एक ऐसी देवी है जो मात्र मानस उपचार से ही प्रसन्न हो जाती है पर इसके परिवार

में एक से एक उग्र व विध्वंसक देवी देवता हैं जिनको बलि देना आवश्यक है नहीं तो स्वयं का नुकसान होने लगता है। बलि विधिवत व प्रेम से दें। नित्यकर्म पूजा प्रकाश से मानस उपचार कर लें या मूल मंत्र पढ़कर या दशोपचार या षोडशोपचार कर लें।

अर्घ्य

ऊँ आं हूं ह्रीं स्फ्रें श्मशानवासिन्यै कामकलाकाल्यै एषो अर्घो नमः।
अनार का रस शिवलिंग या काली विग्रह पर चढ़ाये।

बलि प्रकरण

वैसे यह मूलतः वाम मार्ग की देवी है जिसके पूजा में मांस मदिरा अनिवार्य है पर कुछ विकल्प ऐसे हैं जिससे इसकी पूर्ति हो जाती है। जैसे-ताम्र के पात्र में रखा मधु कांसा के बर्तन में रखा नारियल पानी कुल्हड़ में रखा पानी अदरक मंदिरा हो जाता है।मांस के विकल्प में जैफर बराबर होता है,मुर्गा के नीबू बराबर होता है बकरा के भूरा कुहड़ा बराबर होता है भैंसा के नारियल बराबर होता है। मानव बलि के गूढ़ रहस्य है। अनार का अभिषेक करने से देवी रक्त तुल्य अभिषेक का फल प्रदान करती है। गुड़ व मधु भी मांस मदिरा का विकल्प है।अगर आप समर्थ साधक है तो दो पानका पत्ता एक सीधा एक उल्टा उस पर कपूर का टुकडा रख के दो बतासा व दो लौंग की बलि दें अगर इससे भी अच्छी व्यवस्था

देनी हो तो किसी साफ सुथरे सुई से अनामिका अंगुली की दो बूंद रक्त बताशे पर लगा दें और जला दें और भी समर्थ साधक हो तो जलती चिता में दो बूंद रक्त की बलि नारियल पर लगाकर दे। उपरोक्त समस्त बलि विधान मैने अपने तंत्र जीवन में किया है। निश्चिंत रहें यह तंत्र क्षेत्र है बच्चों का खेल नहीं है दम है तो विश्वास कर नहीं तो बर्दाश्त कर झूठ मूठ का हाय हाय मत कर। आप एक साफ थाली या ऐसा प्लेट जो ताम्र या कासा या फूल का हो सामने रखें उसमें नींबू नारियल जैफर भूरा कुहड़ा,अनार सभी रखें या जो उपलब्ध हो बगल में एक प्लेट में काटने के लिये चाकू या अन्य अस्त्र रखें। फिर उस अस्त्र का पूजन करें।

आवाहन्

काली काली व्रजेश्वरी लौह दण्डायै नमः। फिर हाथ में चाकू लेकर यह बोलें। ह्रीं २ श्रीं ५ काली २ करालोष्ठी फेत्कारणी खाद्य छेदय २ सर्वान दुष्टान मारय २ लुलायकम खडगेन छिन्धि २ किलि ३ चिकि२ पिब २ रुधिरं च स्फ्रैं २ किरि २ कालिकायै नमः ।

पूजा

यथा वाहं भवान देष्टि यथा वहसि चण्डिकाम तथा मम रिपून दिसं शुभं वह लुलायकम यमस्य वाहनस्त्वं त वरु रुपधराव्यय

आयुर्वितः येशों देहि कासराय नमोऽस्तुते । दैवे पत्रे च सुभगेः खड़गस्तवं सड़गसन्निभः छिन्धि विहनान महाभाग गुहाजात नमोऽस्तुते । गन्धः पुष्प,धूप,दीप अगरबत्ती दिखायें अस्त्र को।

प्रार्थना

यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा अतस्त्वाम् घाटयिष्यामि तस्मादयज्ञे वधोऽवधः ।

बलिमंत्र

ॐ क्लीं२ ह्रीं२ हूं२ ह्रीं ह्रीं हूं भगप्रिये भगमालिनि महाबलिं गृहण२ भक्षय२ मम् शत्रून नाशय२ उच्चाटय२ हन२ त्रुट२ छिन्धि२ भिन्धि२ पच२ मथ२ विध्वसय२ मारय२ द्रावय२ ह्रीं स्वाहा ।

यह मंत्र पढ़कर चाकू से काट दें।

साधना समाप्ति के बाद निर्जन स्थान पर बलि पदार्थ रखना आवश्यक है। बलि पदार्थ से उस क्षेत्र के भूत प्रेत की तृप्ति होती है। मैं साधना करके रात १ बजे या २ बजे निर्जन स्थान में जाया करता ओर बलि द्रव्य रख देता। पीछे मुड़कर देखना खतरनाक हो सकता है सावधान रहे।

भोजन बलि

पके चावल को किसी साफ थाली में महुये के पत्तों का दोना बनाकर १७ जगह रखें फिर निम्न मंत्र बोलें ।

मंत्र

ऊँ ह्रीं२ हुं२ क्षीं२ स्फ्रों२ आं२ क्लीं२ कामकलाकाली महाकामातुरे महाकालप्रिये ममानिष्टं निवारय२ शत्रून स्तंभय२ मारय२ दम२ मर्दय२ शोषय२ इमं बलिं गृहण२ खादय२ हूं स्वाहा।

साधना समाप्ति पर समस्त सामग्री ऐसे एकान्त में रखें जहां प्रेत निवास की सम्भावना अधिक हो ।

विशेष

एक बार मै किसी समस्या से परेशान था मां ने उपस्थित होकर एक विधान बताया था कि अनार खड़ा करके बलि मंत्र से मंत्रित करके देने से समस्या दूर हो जायेगी विशेषत: शत्रु की पर मैंने प्रयोग नहीं किया मारण कर्म में मेरी रुची नहीं है ।

जलार्पण

ऊँ ऐं श्रीं क्लीं मां स्त्रीं आं क्षीं ग्लू चण्डकापलिन्यै इदं जलं पिव२ स्वद२ फट् आं स्वाहा ।

कुल्हड़ में या मिट्टी के पके घड़े में जल रखकर उपरोक्त मंत्र बोलें।

शान्तीपाठ

नित्यकर्म का शान्ति पाठ करें या 'महाकाल संहिता''गुह्यकाली खण्ड' का शांति उपक्रम ।

अंगबलि

पके चावल या कच्चे जौ से सभी दिशाओं में बलि दें।

पूर्व में-क्षेत्रपाल, दक्षिण में-बटुक भैरव, पश्चिम में-अष्टभैरव उत्तर में-गजानन, अग्नि कोण में-योगिनी, नैश्रृत्य में-डाकिनी बायब्य-चामुण्डा, ईशान-मातृका,कामदेव,रति,प्रीति आदि इसके बाद समस्त भूत व भैरवं व चाण्डालिनी(उच्छिष्ट)को बलि दें। फिर-दैत्य,दानव,असुर,यातुधान,यक्षिणी,अप्सरा,भैरवी बेताल,कूष्माण्ड,किन्नर,प्रेत,ब्रह्मराक्षस,गन्धर्व,पिशाच,ग्रह,रुद्र,नाग के लिये कुछ खाद्य पदार्थ रखें । क्योकिं ये सभी कामकाली के सेवक हैं। बलि प्रकरण कामकाली का मुख्य अंग है। इसके बिना आगे का मार्ग प्रशस्त नहीं होता है।

यन्त्र आवरण पूजन

प्रथम आवरण-ऊँ संहारिण्यै नमः,ऊँ भीषणायै नमः,ऊँ मोहिन्यै नमः,ऊँ कुरुकुल्लायै नमः,ऊँ कपालिन्यै नमः,ऊँ विप्रचिन्तायै नमः।

द्वितीय आवरण-ऊँ उग्रायै नमः ऊँ उग्रप्रभायै नमः ऊँ दीप्तायै नमः ऊँ नीलायै नमः ऊँ घनायै नमः ऊँ बलाकायै नमः ।

तीसरा आवरण-ऊँ ब्रह्मायै नमः ऊँ नारायण्यै नमः ऊँ माहेश्वरायै नमः ऊँ चामुण्डायै नमः ऊँ कौमार्ये नमः ऊँ अपराजितायै नमः ऊँ वाराहयै नमः ऊँ नारसिंहौ नमः ऊँ इन्द्राण्यै नमः ।

चौथा चरण-ऊँ असितागं भैरवाय नमः ऊँ रुरु भैरवाय नमः ऊँ चण्डभैरवाय नमः ऊँ उन्मत्तभैरवाय नमः ऊँ क्रोध भैरवाय नमः ऊँ कपाली भैरवाय नमः ऊँ भीषण भैरवाय नमः ऊँ सम्मोहन भैरवाय नमः ।

पंचम आवरण-ऊँ एकपादाय नमः ऊँ विरुपाक्षाय नमः ऊँ भीमाय नमः ऊँ संकर्षणाय नमः ऊँ चण्डघण्टाय नमः ऊँ मेघ नादाय नमः ऊँ वेगमालाय नमः ऊँ प्रकम्पनाय नमः ।

छठा आवरण- ऊँ उलकामुखायै नमः ऊँ कोटराक्ष्यै नमः ऊँ विघुज्जिहवायै नमः ऊँ करालिन्यै नमः ऊँ व्रजोदर्ये नमः ऊँ तापिन्यै नमः ऊँ ज्वालायै नमः ऊँ जालन्धर्यै नमः।

सातवा आवरण–रुद्र,लोकपाल,दिग्गज,आदित्य,पितर,नाग,यक्ष आदि का उपरोक्त प्रकार पूजन करें।

यह दैनिक हो सके तो करें नहीं तो पूजा के प्रथम दिन करें ५१ भैरव,५१ कामदेव, ५१ नरसिंह,५१ डाकिनी,५१ महाविद्यायें,५१ शक्तियों को प्रणाम कर क्षमा प्रार्थना माँग लें। विधान के चक्कर में न पड़ें।

विनियोग- अस्य श्री कामकला काली त्रैलोक्यार्षण मंत्रस्य महाकाल श्रृषिः वृहती छन्दः कामकलाकाली देवता क्लीं बीजमं हूं शक्तिः सर्वाथसिद्धये जपे विनियोगः।

हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़कर छोड़ दें।

अंगन्यास–क्लीं का अंगुष्ठाभ्याम् नमः ।
क्रीं म तर्जनीभ्याम नमः ।
हूं क मध्यमाभ्याम नमः ।
क्रों ला अनामिकाभ्याम नमः ।
स्फ्रें का कनिष्ठाभ्याम् नमः ।
कामकला काली ली करतल कर पृष्ठाभ्याम नमः।

षडगं न्यास- कली का हृदयाय नमः ।
क्रीं म शिरसे स्वाहा ।
हूँ क शिखायै वषट् ।
क्रौं ला नेत्रत्रयाय वौषट् ।
स्फ्रें का कवचाय हुम ।
कामकला काली ली अस्त्राय फट् ।

ध्यान

इसका ध्यान कई प्रकार से होता है। हाथ में बिल्व पत्र लेकर ध्यान करें। पूजन में भी गुड़हल पुष्प व बिल्व पत्र अधिकाधिक प्रयोग करें।

उद्यद्घनाघना शिलष्यज्जवा कुसुम सन्निभाम्। मत्त कोकिलनेत्रायभां पक्वजम्बूं फल प्रभाम्। सुदीर्घ प्रपदालम्बि विस्त्रस्तधनामूर्द्धाजाम् । ज्वलदङ्गार वच्छोण नेत्रत्रितयभूषिताम्। उधच्छारद संपूण चन्द्रकोकनदाननाम् दीर्घ दंष्ट्रायुगोदञ्चद् विकराल मुखाम्बुजाम। वितस्तिमात्र निष्क्रान्त ललज्जिहवा भयानकाम्। व्यात्ताननतया दृश्यद्धात्रिशंद् दन्तमण्डलाम्। निरन्तरम् वेपमानोत्तमाङ्गां घोररुपिणीम्। अंसासक्तनृमुण्डासृक पिवन्ती वक्रकन्धराम्। सृक कच्छन्छस्रवद्रक्त स्त्रापितो रोजयुग्मकाम्। उरोजा भोग संसक्त संपत द्रुधिरोच्चयाम्।सशीत्कृतिधयन्तीं तल्लेलिहानर संज्ञया।

मूल मंत्र(त्रैलोक्यार्षण मंत्र)

"क्लीं क्रीं हूं क्रों स्फ्रें कामकलाकाली स्फ्रें क्रों हूं क्रीं क्लीं स्वाहा।"

यह अठारह अक्षर का मूल मंत्र है जिसमें त्रैलोक्य के किसी भी प्राणी को बुलाया जा सकता है चाहे वह मानव,दानव,देव,गन्धर्व यक्ष,अप्सरा,किन्नर,आदि हो वह आते हैं व कार्य करते हैं। कुन्ती को दुर्वासा ने यही मंत्र दिया था जिससे सूर्य पुत्र कर्ण पैदा हुये थे। आगे सभी जानतें हैं। किसी भी अमावस्या को मात्र दस हजार जाप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है अगर एक दिन में सम्भव न हो तो अमावस्या से शुरु करके जितने दिन में सम्भव हो पूर्ण करें। प्रतिबन्ध नहीं है।

अघोर मूल मंत्र

"ऊँ हूं ह्रीं आं क्लीं स्फ्रें कामकलाकाली सिद्धीं देहि देहि स्वाहा"

यह मंत्र भी प्रभावी है पर थोड़ा धीरे परिणाम देता है मैने अपने तंत्र जीवन में दोनो प्रयोग आजमाया है।

हवन- कामनाभेद से सामग्री मिला लें हवन सामग्री में अनार का दाना,गरी का टुकड़ा,गुड़,मधु,विल्वपत्र,अवश्य मिलायें। मैंने एक वशीकरण कार्य के लिये मात्र घी और गुगुल में इत्र व गुलाब का पुष्प मिलाया था कामना पूरी हो गई थी।

विधि- सर्वप्रथम हवन के नियम का पालन करें फिर संहार भैरव को एक आहुति दें। आठ दिशा में तिल घी मिलाकर हवन करें तथा १६ बार मूल मंत्र का हवन करके फिर दशांश हवन करें। तर्पण मार्जन आदि यदि विस्तृत करना चाहें तो 'महाकाल संहिता' का अनुगमन करें नहीं तो सामान्य हवन तर्पण मार्जन भोज कर दें। आपकी कामना अवश्य पूरी होगी। मूल विधान पर ध्यान दें।

विशेष-गुटिका सिद्धी,बेताल सिद्धी अन्जन(हाजरात सिद्धी) इसी मंत्र से हो जाती है।

अनुभव प्रकरण

एक(स्वप्न संदेश)-मेरी जल्दी की नौकरी लगी थी साथी अध्यापक में एक बुजुर्ग अध्यापक थे विद्यालय का भार उनके ऊपर था। नेक इंसान थे जब भी मैं घर आता तो कुछ दिन रुकना पड़ता समस्या यह थी कि वेतन मिलता ही नहीं था विद्यालय घर से काफी दूर था। पुनः जब जाता तो हंसते कहते कि अगर पैसों की व्यवस्था न हो सके तो दो चार दिन और रुक लेते यहाँ तो मैं हूँ क्या चिन्ता है। शहर में रहना सोना खाना के लिये दूसरे का आसरा था। मैं संस्कृत का जानकार नहीं हूँ न ही मैंने कभी संस्कृत पढ़ा हूँ पर काफी रुचि तंत्र मंत्र में है। एक व्यवसायिक पत्रिका उस समय निकलती थी जिसके प्रकाशक ने यह लिखा था कि मैं कामकाली के पुस्तक 'महाकाल' संहिता का अनुवाद कर रहा हूँ जबकि उनको संस्कृत का क ख ग भी नहीं मालूम था किसी विद्वान को पैसा देकर अनुवाद करवाये थे। किसी प्रकाशन ने जो महाकाल संहिता का अनुवाद करवाया था उसको ही अपना मानते थे खैर बहुत बड़े तांत्रिक व्यापारी थे। उसी पत्रिका से मैं कुछ गलत सही पाठ करता था। विधि विधान तो भगवान ही जानता था पर मां की कृपा थी मेरे ऊपर क्योकिं परमात्मा सारे यम नियम से परे हैं भावना भगवान की प्रथम पूजा है। साधना मैं कभी करता

कभी भूल जाता कभी एक माला तो कभी दस बार यही शुरुआत थी कामकलाकाली की। मैंने एक रात स्वप्न देखा कि बुजुर्ग अध्यापक सपने में बड़े दीन हीन अवस्था में है। मैं अगले दिन विद्यालय पहुंचकर एक छात्र की पुस्तक पर यह लिख दिया कि प्र०अ० के ऊपर या उनके परिवार पर भारी विपत्ति आने वाली है। साथी अध्यापकों से कहना बेकार था क्योंकि मुझे हसी का पात्र बनना पड़ता कि ये बड़े भविष्य जानने वाले हैं नहीं तो यह इतनी दूर नौकरी क्यों करते। मैं भी लिखकर भूल गया । वे भी अवकाश प्राप्त हो गये। एक दिन पता लगा कि उनका एक पुत्र सूमो गाड़ी से कहीं जा रहा था कि कीचड़ भरे तालाब में उतर गई। रात भर में वह गाड़ी कैसे-कैसे धीरे धीरे डूबी होगी कैसे मरा होगा वह कितनी कष्टदायक रही होगी उसकी मौत कैसे बर्दास्त किया होगा उसका बुजुर्ग पिता सोचकर ही मन कांप उठता है। संयोग से एक बार मैं भी उस तालाब की ओर चला गया बड़ा दर्दनाक मंजर रहा होगा उस समय जिस समय वह सूमो डूबी होगी । अगले पथ पर उन अवकाश प्राप्त अध्यापक का सारा पैसा जो मिला था एक व्यक्ति ने जमीन देने के नाम पर लेकर भाग गया जबकि उसने उसी जमीन को पहले एक व्यक्ति को बेंच दिया था कितना कष्ट हुआ होगा उनको आगे वह बीमार रहने लगे काफी इलाज चला पर मैं उनसे मिल नहीं सका। एक बार किसी ने बताया कि वे दो साल पहले ही मर गये मैं काफी

दुखी हुआ। अगर मैं यह भविष्यवाणी स्वप्न वाली उनसे बता देता तो मैं अपराधी नहीं होता । होनी तो टलती नहीं पर मैं जरुर भार मुक्त होता। हे माँ भगवती कामकलाकाली अगर मैंने कुछ भी तेरा नाम जप आदि किया हूँ तो उस महामानव की आत्मा को शांति प्रदान करना तब मैं समझूगां कि उन्होनें तो नहीं पर तूने मुझे इस अपराध के लिये क्षमा किया।

दो-(गंगा अवतरण) अविश्वास करना मानव का स्वभाव है वह किसी पर भी शक करता है। उस पर तो वह निश्चित ही करेगा जो उसके अच्छे चिंतक हैं। विरोधी,षड़यंत्रकारी,लोलुप लोगों पर वह जल्दी विश्वास कर लेगा पर जो उनका भला चाहेगा उन पर प्रश्नचिन्ह लगा देगा। जैसे एक विद्वान समाज का शुभ चिंतक है वह किसी का बुरा नहीं करता अपने काम से काम रहता है तो समाज उसको मूर्ख मानेगा। वही एक विद्वान धोखेबाज है लूट खसोट कर रहा है झूठ बोल रहा है अच्छा वस्त्र, अच्छा रहन सहन है तो समाज उसको योग्य मानेगा । आज के समय में बाहरी दिखावा ही योग्यता अयोग्यता का परिचायक है। संसार में रहेगें तो संसार की हवा जरुर लगेगी यदि संसार में धर्म अधर्म है तो आप दोनो से प्रभावित होगें। मैं धीरे धीरे पूजा पाठ बढ़ाता जा रहा था पूजा पाठ से मेरा कोई सांसारिक कार्य नहीं हुआ है पर आत्मिक संतोष जरुर

हुआ है। कम से कम इतना संतोष तो है कि उस देश में हम उन विद्याओं के साथ हैं जो विश्व में कहीं नहीं है। जो हमारे देश में है वह कहीं नहीं हैं पर हमें संतोष ही नहीं है। विदेशी भारतीय विद्याओं के लिये परेशान है तो हम पैसों के लिये। संयोग से एक बार नवरात्र करने का विचाार हुआ इच्छा हुई कामकाली मंत्र की परीक्षा कर लूं। मानवीय स्वभाव से अविश्वास हुआ। कलश स्थापना किया पर उस मिट्‌टी के कलश में मैंने जल नहीं भरा सोचा गंगा का आह्वाहन भी कर लूं। फिर मैं भूल गया सामान्य विधान से मैंने मंत्र जाप किया माँ की कृपा से अनुष्ठान पूरा हुआ। मैंने कामकाली का ५ या ४ अनुष्ठान किया है। हमेशा मैं ११ माला के हिसाब से १०दिन का ही प्रयोग रखता हूँ। सब नियम से मुक्त होकर प्रयोग अपनाता हूँ। अन्तिम दिन मैं जब सामग्री विसर्जित करने गया तो देखा कलश जल से भरा था। आश्चर्यचकित रह गया मैं। क्या कामकाली मंत्र से आवद्ध होकर गंगा स्वयं उस कलश में आ गई क्या। मेरी नजर धोखा खा गई। क्या ऐसा भी हुआ होगा कुन्ती के साथ महाभारत काल में। आज तक मैं समझ नहीं पाया ।

तीन-(आत्मा का आगमन) आज तंत्र मंत्र में जितना व्यापार है उतना शायद किसी क्षेत्र में नहीं। हमारे देश के अच्छे अच्छे नामी तांत्रिक इसी व्यवस्था में लगें है कि कोई विदेशी मालदार मिल जाये

तो जीवन नैया पार लग जाय। अनाचार व्यभिचार धन हड़प की होड़ है फिर भी हम उन्ही से जुड़े हैं। कोई पुस्तक पत्रिका में प्रचार कर कोई मंदिर बनाकर कोई तांत्रिक सामग्री बेंचकर पैसा बटोर रहा है तो कोई गुरु जी बनकर कोई बाबा कोई कुण्डलिनी जागरण कराके तो कोई दीक्षा देकर पैसा कमाकर हमारे देश का मान बढ़ा रहा है। मेरे यहां कभी कभार एकाध लोग आ जाते है कोई अगर गुरु जी कह देता है तो मैं यही कहता हूँ गाली दे दो और इच्छा हो तो और कुछ कह लो पर गुरुजी का अपमान मत करो। मैंने अपने लिये बहुत कम कार्य किया है पर उसमें यह अवश्य रहा है कि एक दो कार्य मुझसे नहीं हुआ मैं अपनी कमी मान लूं या उनका दुर्भाग्य। जो मैं नहीं कर सका वे कार्य अब तक नहीं हुये। एक मित्र जिनकी पत्नी मेरे पास इसलिये आती थी कि उसका पति घर से चला गया था ।उस समय कामकाली प्रयोग मैंने सिद्ध कर लिया था। कई बार मैंने प्रयोग करने की सोचा पर नहीं कर पाया। अनमनें ढंग से अति लघु मंत्र पाठ मैंने किया पर परिणाम नहीं आया सम्भवतः उसकी मृत्यु हो गई रही होगी क्योकिं जब मैं मंत्र पाठ करने की सोचता बेचैनी होने लगती। दूसरे पक्ष में एक बहुत बड़े पैसे वाले थे उनका एक ही पुत्र घर से चला गया था चार पाँच साल बाद मिले, उन समय में वे भारत

के सभी विद्वानो से सम्पर्क किये थे पर पता नहीं लगा था। मैंने काफी रुपया खर्च करके एक विद्वान से प्रयोग कराया पर परिणाम नहीं आया फिर मैंने भी दो तीन प्रयोग किया परिणाम नहीं आया। अंत में मैंने २१ दिन का काल ज्ञान प्रयोग किया फिर भी नहीं आया पर उसी अनुष्ठान में वह स्वप्न में आकर यह कहा कि मैं आ गया हूँ। जब वे दरवाजे पर पहुँचे तो कोई नहीं था। सम्भवतः उसकी आत्मा रही होगी शरीर नहीं रहने के कारण आत्मा ने ही सम्पर्क कर लिया हो। मंत्र बल के प्रभाव से। मेरे जैसा मूर्ख न इस धरती पर है न होगा जो अपना पैसा लगाकर अनुष्ठान करेगा। उन महाशय ने कुछ पैसा मुझे दिया था बाद में मैंने वापस कर दिया। हराम का क्या खाना। एकाध कार्य में नहीं कर सका ऐसा मुझे याद है पर मैंने अपने जीवन में न किसी से पैसा लिया न सम्मान। अपितु उनके आने पर आवभगत में मेरा ही पैसा लगा। ऐसा मूर्ख तांत्रिक के यहाँ कौन जाना चाहेगा जो अपना ही लुटा रहा हो आज लोग लूटने वाले तांत्रिक को पैसा लेकर खोज रहें है। मेरे एक बहुत खास मित्र के पड़ोसी का ट्रक चोरी हो गया उन्होंने तंत्र मंत्र के नाम पर लाखो रुपया खर्च किया यहाँ वहाँ दौड़े। ट्रक यहाँ है वहाँ है यहाँ जाकर ले लो वहाँ जाकर ले लो नहीं मिला।जब पैसा नहीं रहा तब हमारे पास आये। मैंने स्वप्नविद्या से आभाष कर लिया था कि नहीं मिलेगा। मैंने बता भी दिया पर वें नहीं माने

ऐसे

आभास

फिर मेरे ही एक मित्र के चक्कर में पड़ कर काफी रुपया गवां बैठे। कौन समझाये ऐसे महापुरुषों को । एक बार पुनः मिले बोले मैं स्वयं दुर्गा पाठ करके प्राप्त करा लूगां तब आपसे मिलूगां। मैने पुनः कह दिया नहीं मिलेगा। आज पाँच साल से प्रयास कर रहें है भगवती जाने। मेरा तंत्र जीवन घाटे का रहा है एक रुपया मैंने इसके नाम पर नहीं लिया ऐसा मुझे याद है। कभी किसी का भला नहीं किया तो बुरा भी नहीं यह मैं सोचता हूँ पर दूसरे क्या सोचते होगें पता नहीं। हे माँ भगवती कामकलाकाली तेरी कभी इच्छा होती होगी कि ब्रह्माण्ड के किसी कोने से धरती पर देखू।होती होगी कि नहीं तू ही जानती हैं पर तेरे गिने चुने साधक इस पर हैं तो जरुर होती होगी ऐसी मैं कल्पना करता हूँ। तंत्र के नाम पर लूटकर कोई आश्रम बना रहा है कोई मंदिर तो कोई अपना घर कोई क्या क्या यह वही जानता है। तब तू प्रसन्न हो जाती होगी कि मेरे पुत्रों ने वाह क्या बना लिया,कितनी प्रगति कर ली। होटल में बैठे साधक,स्त्रियों से घिरे साधक,लक्जरी गाड़ी में चल रहे साधक,किसी बहन बेटी की इज्जत से खिलवाड़ कर रहे साधक चोरी,स्मगलर,व्यभिचार,अनाचार,लूट कर रहे साधक पर तेरी कृपा अवश्य बरसती होगी क्योंकिं तेरी शक्ति तेरी सामर्थ्य के असली उपयोगकर्ता यही तो हैं। २० रुपया में यह मंत्र ३० रुपया में

यह सिद्ध माला,४० रुपयों में यह विग्रह वेश्याओं की तरह धन्धे वाली कालगर्लो की तरह जो तुमको बेच रहे हैं तेरी इज्जत सरे आम रोड चौराहों पर नीलाम कर रहें हैं,तुझे नंगा कर रहे है पता नहीं और क्या क्या कर रहे हैं। उनको देखकर उनके कार्यों को देखकर तुझे ठण्ढक जरुर होती होगी। कितनी मेहनत लगन से ये मानव धर्म के पथ पर निर्वाध अग्रसर है। वहीं दूसरी ओर अगर मेरी तरफ देखती होगी तो तुझे बहुत कष्ट होता होगा कि फटे पुराने कपड़े में लिपटा यह साधक निर्बल शरीर वाला पैदल ही धूल फाँक रहा है बड़ी पीड़ा होती होगी तुझे । तुम यह सोचती होगी कि चलो आने दो हिसाब लूंगी। मरना निश्चित है मैं भी मरुगाँ सभी लोग मरेगें। मरने के बाद सभी साधक स्वर्ग जायेगें पुनः धरती पर आयेगें उससे बड़ा कारनामा करेगें और तेरे लायक पुत्र कहलायेगें और मैं जब मरुगाँ उस समय कोई यमराज का दूत नहीं आयेगा क्योकिं तूने सबको मना कर दिया है कि यह मेरा अपराधी है इसलिय मेरे दूत इसको ले आयेगें और इसके बाद तेरे दरबार में मेरी पेशी होगी। मुझे देखते ही तू गुस्से में लाल हो जायेगी प्रश्न पर प्रश्न करेगी तू तूने तंत्र मंत्र का व्यापार नहीं किया क्यों क्यों तुमने किसी से पैसा नहीं लिया क्यों तुमने सरेआम मुझे नीलाम नहीं किया,क्यों तुमने धर्म की आड़ में कुकर्म नहीं किया,क्यों तुमने वह सब नहीं किया जिनको स्वर्ग मिला है। प्रश्न पर प्रश्न की वौछार करेगी तू और मैं एक जघन्य

अपराधी की भांति सर झुकाये खड़ा रहूँगा। पर जब तेरा प्रश्न रुकेगा और तू फैसला सुनायेगी बहस की तो बात ही नहीं है तू ब्रह्माण्ड की अन्तिम सीमा है जब स्वयं शिव तेरे लिये शव हैं तो कौन बहस करेगा किसकी मजाल है । तेरा फैसला होगा तू निकम्मा है,कामचोर है,नालायक है,कुपुत्र है,तू धरती पर दुबारा जाने लायक नहीं है धरती का भार है तू करोड़ो असंख्य जन्म के बाद मैने तुझे धरती पर भेजा था। एसलिये कि तू नालायकी का कार्य करें। मुझे ऐसे गहन अन्धकार में डाल देगी तू जहाँ केवल मैं रहूँगा और तू इसके अलावा ब्रह्माण्ड का कोई भी देव दानव,मानव आदि नहीं यही मेरा दण्ड होगा। तेरी दण्ड संहिता में इससे बड़ा दण्ड नहीं होगा ।

चार-(षड़यंत्र और माँ की अनुकम्पा) मैं जिस रेलवे कालोनी में रहता था उसी में एक लड़का रहता था जो अपने बाप की जगह नौकरी करता था। स्थानाभाव के कारण मैंने और कालोनी अधिपति ने रख लिया था । मेरा कपड़ा साफ करना,खाना बनाना रुम धोना आदि उसका कर्म था जब मैं कभी बीमार होता तो वह हाथ पैर दबाता, दवा देता उसका अनिवार्य काम था। एक बार उसने रोते हुये बताया कि पिताजी की मौत की दशा में उसका छोटा भाई घर से चलागया । उसके गये चार-पाँच साल हो गये है।उसकी माँ और रिश्तेदारों ने बहुत खोज बीन की

पता नहीं चला। तंत्र मंत्र के चक्कर में भी काफी पैसा बरबाद हो गये थे। कुछ समय पश्चात् मैंने उसकी सेवा से प्रसन्न होकर कह दिया तुम्हारा भाई जीवित है और मिलेगा। यही शब्द मेरे लिये अभिशाप हो गये कितनी भारी कीमत चुकानी पड़ी मुझे यह मैं ही जानता हूँ। उसकी माँ ने भी मुझे अपना पुत्र मान लिया उसके परिवार का हिस्सा हो गया मैं उसके घर तक गया मै उसके भाई बहन ने इतना सम्मान दिया जितना मेरे परिवार से भी नहीं मिला । समय पंख लगाकर उड़ने लगा । कुछ समय बाद जगह जगह से उसको मगांने के लिये दबाव पड़ने लगा। नौकरी उस समय कठिन थी लिहाजा समय का अभाव हो गया। तरह तरह की बात होने लगी कि ये केवल सेवा करवा रहे है आगे कुछ नहीं करेगें। उस समय मेरा वेतन बहुत कम था एक बार जोर आजमाया फेल हो गया पैसा भी कुछ ज्यादा खर्च हो गया पर मैंने एक रुपया भी उससे नहीं लिया। पुनः अफवाह फैलने लगी तो उस लड़के ने अपनी माँ से हवन के लिये कुछ रुपया मांग कर दिया। मैंने पुनः एक प्रयोग आजमाया जिसमें काफी रुपया लगा फिर किस्मत ने धोखा दिया । समाज में तरह-तरह की फिर बात फैल गई कि फला ने फला का इतना रुपया ले लिया। समस्या वही की वही थीं। पुनः मैने एक प्रयास किया जिसमें हवन आदि में काफी खर्च हो गये। कहा जाता है कि किस्मत जब मजाक करती है तो मजाक ही करती है जिसके कालोनी में था

उनको मेरे लिये ताने बाने सुनने पड़े। अब मैं बुरी तरह फस गया था वहाँ से भाग भी नहीं सकता था भागने का अर्थ था अपने को अपराधी साबित करना। लिहाजा टूट गया था मैं। इसी उसी में लगभग एक से दो साल गुजर गये। शिक्षा जगत की गर्मी की छुट्टी हो गई मैं घर आ गया। मानसिक रुप से मैं बहुत परेशान था।कभी-कभी सोचता कि........। हार कर मैंने अन्तिम बार कामकाली अनुष्ठान प्रारम्भ किया रात में ११ बजे पाठ करता पाठ करने में १ या २ बज जाते फिर बलि सामग्री लेकर मुस्लिम कब्रिस्तान जाता यह सब करने में ४ बज जाता। कितना कठिन समय रहा होगा वह कितना दुखी रहा होगा मैं आप अगर बुद्धजीवी हैं तो स्वयं सोच लें। माँ की कृपा से वह लड़का आठवें दिन बिना किसी अता पता के घर आ गया उसकी बहन ने उसी दिन मुझे सूचित किया। वह लड़का दिल्ली के किसी आटो गैरेज में काम करता था ऐसा उसने बताया। उस परिवार का सौभाग्य था कि बच्चा आ गया पर मेरा दुर्भाग्य मेरे पीछे ही पड़ा रहा। अब सब कुछ सामान्य था पर एक दिन परिस्थित और बिगड़ गई उसकी माँ ने मुझसे यह कहना शुरु कर दिया कि आपका जो पैसा लगा है वह ले लिजिए और मेरा वापस कर दीजिये। उसके समझ में यह था कि सौ पचास रुपये लगों होगे और जो लड़का मेरे साथ था

उसको आस पास के लोगों ने यह कहा कि तुम्हारा भाई तो आ ही गया है अब पैसा भी मांग लो तो उसने भी पैसा मांगना शुरु कर दिया। उसका कहना था कि अगर आपके प्रयोग से आता तो पहले क्यूं नहीं आया । जबकि मैंने अन्तिम बार उससे यह कहा कि चाहे कुछ भी हो जाय अगर १० दिन में तुम्हारा कार्य नहीं होगा तो पैसा दे दूगां । कैसे समस्या मुक्त हुआ होगा मैं आप स्वयं सोचें। इसके बाद मैंने किसी भी मनुष्य का प्रयोग करना ही छोड़ दिया। मैंने बहुत समस्यायें झेली है पर इतना कठिन प्रयोग कभी नहीं किया। अगर माँ ने उस अनुष्ठान में मेरी सहायता नहीं की होती तो मैं जीवित नहीं होता । अगर होता तो भी बिना सम्मान के । फिर मैंने बहुत कष्ट ग्रहण किया पर माँ को कभी कष्ट नहीं दिया ।

पाँच(खोये की प्राप्ति व दुष्कर्म)-हमारे एक मित्र थे पण्डित जी जिनका भाई घर से अचानक गायब हो गया उसके जाने के बाद उनके पिता बीमार रहने लगे। माता की परेशानी भी बढ़ गई। पिताजी ने मुझसे हाथ जोड़कर निवेदन किया,उम्र में बड़े थे वे और अध्यापक भी थे कहा कि अगर आप मदद नहीं करेगें तो मैं आत्महत्या कर लूगां ।ब्रह्महत्या का भागी न बनू इसलिये कामकाली के अघोर मंत्र का दस दिन का अनुष्ठान शुरु किया हवन सामग्री पूजा बलि की सामग्री मित्र ने खरीद कर दे दिया

बहुत कम खर्च रहा होगा । दस दिन तो दूर आठवें दिन ही संन्देश आ गया कि मैं यहां हूँ आ नहीं सकता। अगर मैं 'त्रैल्योकार्षण मंत्र' प्रयोग करता तो संदेश नहीं उनको आना पड़ता पर मैं प्रतिबन्धित था । बाद में सारी स्थिति से अवगत हुआ। मन खिन्न हो गया। उस लड़के ने शादी का झांसा देकर एक लड़की से सम्बन्ध बना लिये थे जबकि उसकी शादी हुई थी और उसके बच्चे भी थे। इसी डर से वह भाग गया था और लड़की उसके घर आ धमकी थी। वह गर्भवती भी थी। यही कारण था कि उसके पिता आत्महत्या करने पर उतारु थे। कोई भी पिता जिसके पास सम्मान है अपने कुपुत्र से दुखी होकर ऐसा करना चाहेगा। आगे मैने "कामकाली अघोर" मंत्र का प्रयोग भी किसी के लिये बन्द कर दिया । आप भी मेरे जगह होते तो क्या करते सोचें ।

छः(हाजरात प्रकरण)-दुख नहीं होगा तो सुख के लिये प्रयास नहीं होगा,निर्धनता होगी तो धनवान बनने के लिये प्रयास होगा। रोगी होगा तो स्वस्थ्य होने का प्रयास होगा,बाढ़ नहीं होगी तो तैरने का प्रयास कौन करेगा,आग नहीं लगेगी तो बुझाने का उपक्रम कौन करेगा । शत्रु नहीं होगा तो शमन का प्रयास कौन करेगा। सब मिलाकर समस्या नहीं होगी तो समाधान पर विचार कौन करेगा ।

समस्या समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है। हर कोई अपनी अपनी क्षमता के हिसाब से मार्ग ढूढता है। ऐसा शायद ही कोई होगा जिसके जीवन में कोई समस्या न हो बस उसका रुप व मात्रा कम ज्यादा हो जाती है। कोई समस्या आने पर डटकर मुकाबला करता है उससे कुछ सीखता है जो उसके आगे के मार्ग में सहायता प्राप्त होती है तो कुछ हताश निराश हो जाते हैं और आगे का द्वार बंद कर देते हैं। मेरे साथ भी ऐसा हुआ मैं कामकाली साधना में कुछ स्तर प्राप्त कर चुका था लगभग तीन-चार अनुष्ठान करके उसमें परिपक्वता प्राप्त कर ली थी। अचानक मेरे व परिवार के भयंकर लापरवाही के वजह से घर में चोरी हो गई दरवाजा आलमारी आदि बंद न होने के कारण चोरी का पता नहीं चला कि कब आये कब गये। नुकसान ज्यादा नहीं था पर नुकसान तो नुकसान है। ज्यादा कम की मात्रा देखना बेवकूफी है। रात का समय था इसलिये किसी पर संन्देह करना उचित नहीं था बात आई और गई। मैं अध्यात्म से इस समस्या को ढूढ़ने का प्रयास करने लगा। एकाध जगह गया पैसा खर्च किया ऊल जुलूल पता बताया लोगों ने पर विश्वास करना कठिन था। परिवार के लोगों ने भी अपने-अपने ढंग से प्रयास किया पर सफलता नहीं मिली । मैंने भारत के प्रतिष्ठित विद्वानों से सम्पर्क किया जो हवा में उड़ते हैं। अपना पूर्वजन्म जानते हैं कि मेरा जन्म फला देश में हुआ था। कुछ उच्च स्तर के साधक जिनको भगवती की साक्षात कृपा है तो कुछ ऐसे साधक जो दिन भर कर्मकाण्ड

से शिव,दुर्गा,काली को प्रसन्न करते रहते हैं। ऐसे अनगिनत साधकों सिद्धो,बाबाओं,तांत्रिको,मांत्रिको से सम्पर्क किया जो त्रिकालदर्शी योगी,महारथी,महाअघोरी,श्मशानी थे। पर मैं जहाँ का तहाँ खड़ा रहा। नौकरी भी करता रहा दुखी भी रहा अध्यात्म से, सबसे ज्यादा अपने से कि मैंने कामकाली मंत्र से कई लोगों के भाई पुत्र दिला दिया तो क्या मैं अपनी समस्या नहीं जान सकता। मार्गदर्शक स्वयं ही मार्ग भटक जाये तो आरोप व हंसी का विषय है।विद्यालय मे चोरी आदि का विषय चलने पर एक छोटे बच्चे ने बताया कि अमुक व्यक्ति चोरी के बारे में बताता है। एक मेरे बुजुर्ग परिचित पण्डित जी थे जो चोरी बताते पर एक बार किसी ने उनको मार पीट दिया था लिहाजा वे इस कार्य को छोड़ दिये थे। मैंने सिखाने के लिये कहा था आज कल करते रहे फिर स्वर्ग वासी हो गये। मैं उस व्यक्ति के पास गया जो चोरी आदि बताता था उसने हाजरात के माध्यम से सब कुछ दिखा दिया कि कौन चोर है किसके साथ है कैसे किया है आदि आदि । मैं बहुत प्रसन्न हुआ अपने देश को प्रणाम किया कि हम उस देश में है जहाँ कि आम आदमी भी वह कर सकता जो विदेश की करोड़ो की मशीन । पर मुझे दुख यह हुआ कि यह अदना सा आदमी इस विद्या का जानकार है और मैं इतनी साधना के बाद कुछ नहीं। मैंने कामकाली का मंत्र,कवच पढ़ना शुरु कर दिया । दुख में समय बीता पर अचानक ही जब अंगूठे की ओर ध्यान

गया तो उसमें चोरी चोर उनके अता पता आदि दिख रहे थे। मुझे विश्वास ही नहीं हुआ उठा हाथ मुख आँख धोया स्नान किया फिर पूजन पर वह चित्र चलते रहे जैसे माँ ने मानो उसको सदैव के लिये चला दिया हो । कई महीने तक वे चित्र आते रहे जब ध्यान करता चोरी का वह चित्र उपस्थित होता। फिर मैंने कई लोगों के कार्य किये चोरी हत्या छिनैती आदि का भी मैंने दृश्यावलोकन किया मेरी इच्छा पूरी हो गई। रामायण देखना राम हनुमान आदि के बारे में जानना महाभारत काल के कर्ण,कृष्ण,अर्जुन युद्ध आदि को देखना मेरा नित्य का काम था। हनुमान कैसे उड़ते थे अर्जुन कैसे बाण चलाते थे,कर्ण दान कैसे करते थे आल्हा उदल कैसे लड़ते थे कौन सा किला कहां है कैसा है कौन सा लोक कैसा है कौन देवी देवता कैसा है क्या कर रहा है माँ काली के कृपा से मैं जान लेता था । सबसे ज्यादा मजा मुझे गणेश लोक देखने पर आता छोटे छोटे गणेश के द्वारपाल छोटे छोटे मूसक राज मन प्रसन्न हो जाता । एक बार मैंने आनन्द वश महाश्मशान को बुला लिया सम्भवतः रात ११ बजे का समय रहा होगा । पूरा का पूरा श्मशान ही मेरे घर आ गया । मैं इतना डर गया कि भागने ही वाला था कि न जाने किस पूर्वजन्म के कर्म से रुका । अगर भागता तो या तो मृत्यु को प्राप्त होता या सदैव के लिये विक्षिप्त। इस तरह माँ के कृपा से मैं भूत भविष्य वर्तमान अपना व अपने लोगों का देखता जो उस समय मेरे साथ थे। मेरे ही गाँव की एक महिला आई जिसका पुत्र घर से गया था उसको मैंने देखा तो वह रेलवे लाईन के किनारे ट्रेन पर पत्थर चला रहा था। मैंने हाजरात से उस लड़के

को घर बुलाया जो घर आना ही नहीं चाहता था । वह घर आ गया कुछ दिन बाद उसने एक मासूम लड़की से दुष्कर्म कर बैठा परिणाम स्वरुप उसे ४ या ५ साल जेल में रहना पड़ा । मैंने जब यह सुना तो पैरो तले जमीन खिसक गई। क्या ऐसे पापकर्ताओं के सहयोग होने चाहिये क्या ऐसे मानव जो धन,झूठी इज्जत के लिये कुछ भी कर सकते हैं। उनका तंत्र से सहायता करनी चाहिये। स्वयं सोचे । मैंने माँ से बहुत क्षमा याचना की उसके बाद इतना दुखी हुआ कि इस विद्या(कालज्ञान) को सदैव के लिये त्याग दिया । परदे की बात है परदे में रहे तो अच्छा है।

सात (एक षड़यंत्र)-शहर में जहाँ मैं नौकरी करता वहीं पास के रेलवे कालोनी में रहता जिनके दो पुत्र थे। उनका ही आवास था। मैं भी वहीं रहने लगा न रुम का भाड़ा देना था न खाने का।बस अपनी व्यवस्था करनी थी। खाना,कपड़ा धोना सारी व्यवस्था दोनों लड़के करते थे। समय पर मैं उनके लिये आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवा देता था । समय ठीक चल रहा था कहा जाता है कि आदमी और घोड़े का दिन कब बदल जाये पता नहीं । मैं उनके सेवा से प्रसन्न था। मैं यही प्रयास कर रहा था कि दोनों को उचित कार्य मिल जाय तब मैं यहाँ से प्रस्थान करुँ। कर्म से भाग्य बदल जाता है ऐसा मैने सुना था पर कुछ भाग्य ऐसे हैं जिनको कितना ही कर्म करो नहीं बदलते। खैर भाग्य कर्म के चक्कर में मानव फसा

है सब अपने अपने राग अलाप रहे है। भाग्य चक्र उल्टा चला छोटा लड़का अपने पड़ोस वाली लड़की के साथ भाग गया। लड़का अपनी बहन का सारा गहना(जेवर) तथा लड़की अपनी माँ का सारा जेवर लेकर चले गये। शहर से काफी दूर उनका घर था ठीक उसी के विपरीत काफी दूर मेरा घर था । संयोग यह था कि उस समय मैं घर आ गया था। पुलिस व लड़की पक्ष शहर वाले रुम पर आने जाने लगे थे लिहाजा मैं घर पर ही रुकना उचित समझा। विद्यालय से अवकाश ले लिया। दबाव इतना बढ़ा कि बड़ा वाला लड़का मेरे घर आकर रहने लगा। कुछ दिन बीता उसका अता पता नहीं था। मैंने तो पहले बता दिया है कि मंत्र प्रयोग करना छोड़ दिया था लिहाजा मैं साथ रहता पर साधना वाधना की बात नहीं करता । अंत में हारकर उसके परिवार वालों ने मुझसे हाथ जोड़कर पैर पकड़कर निवेदन किया कि उनको इस समस्या से निकाल लूं। मैं प्रयोग तो कर ही नहीं सकता था पर यह मुझे विश्वास था कि कामकाली से प्रार्थना करुंगा तो समस्या समाप्त हो जायेगी। पर मैंने यह शर्त रखी कि आप लोगों के लिये कोई कार्य पूजा पाठ से नहीं करुगां। हारता क्या नहीं करता वे मान गये। जब उसका बड़ा भाई सो जाता तो मैं माँ से प्रार्थना करता कि इसका कार्य हो जाय और मैं मुक्त। क्योकिं उनकी हर समस्या धन,शत्रु,रोग,कर्ज आदि में मदद करता । उनको यानि कि कालोनी मालिक को उनके एक अधिकारी ने गाली गलौज कर दिया था मैंने स्थानान्तरण करा दिया फिर दूसरा फिर तीसरा चौथे को भी मैंने

माँ से कहकर स्थानान्तरित करवाया था । प्रार्थना का परिणाम यह रहा कि दिल्ली में किसी पाकेटमार ने उन दोंनो का जेवर उड़ा दिया बचा पैसा खा गये। लिहाजा उनको मजबूरन आना पड़ा । पुलिस केस चला मैंने अपनी बाईक रखकर जमानत करा दिया । मैं यह सोचकर यह सब किया कि अब मैं मजे से रहूगां । न इनके लिये पाठ करना होगा न कोई आध्यात्मिक उपचार वे भी मजे से रहने लगे और मैं भी पर विधाता का विधान और ही कुछ था उनके आगे मैं नतमस्तक, आगे क्या हुआ भाग दो पढ़े ।

दो(षड़यंत्र)- माँ भगवती कामकाली ने मुस्कराकर इशारा कर दिया था। काल ने अपनी गति तेज कर दी थी। मेरे ऊपर परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं थी। जिनके कालोनी में रहता था उनका भी सारा कार्य पूर्ण हो गया था लिहाजा मैं भी स्वतंत्र था। मैंने भी काल का पीछा करना शुरु कर दिया था । काल आगे आगे भागा जा रहा था तो मैं पीछे पीछे, काल माँ कामकाली का सेवक है तो मैं उनका साधक दोनों एक दूसरे का पीछा कर रहे थे। काल यह जानता था कि मैं कामकाली का साधक हूं इसलिये मुझसे पीछा छुड़ाना चाहता था,काल के लिये यह बात बुरी लग रही थी कि कोई उसका पीछा करे पर वह अच्छी तरह समझ रहा था कि अगर मैंने कोई गलती की तो परिणाम ठीक नहीं होगा। क्योकिं वह कामकाली के नियम संहिता में उल्लंघन का परिणाम जानता था । अपितु वह दूसरा विकल्प ढूंढ रहा था।

काल अपनी नियति पर और तेजी से भागना शुरु कर दिया था ।अब मैं एक दम उसके पास समानान्तर चल रहा था अब मैं काल को हाथ में आबद्ध करने ही वाला था कि माँ ने हम दोनो को बराबर देखकर मुस्करा दिया । काल ने नई चाल चली उसने मुझे पीछे देखने को कहा मैं धोखा खा गया पीछे देखा तो मेरा दुर्भाग्य मुस्करा रहा था आगे देखा तो काल बहुत दूर चला गया था फिर मैं दुर्भाग्य का साथी हो गया । उसको लेकर अपना कार्य शुरु कर दिया । जो लड़का लड़की लेकर भागा था मेरे पास ही रहने लगा दुगने मेहनत से मेरी सेवा करने लगा ।पर मैं अब सजग था लिहाजा वह अपना काम कर रहा था मैं अपना। मुझे याद है कि वह अब लड़कियो के पीछे भागने लगा था। खैर यह उसका चरित्र था। एक दिन उसने मुझसे एक लड़की से शादी कराने की बात कहा मैं चुप रहा फिर मैं जहाँ जाता मेरे पीछे जाता हर जगह वही बात मुझसे उसकी शादी करवा दो। संबन्ध ही कुछ ऐसे रहे कि लड़की के पिता व लड़के के पिता दोनो इसके विरोधी थे समस्या गंभीर थी। उसने मुझे लालच देना शुरु कर दिया कि मैं आपका हाथ पैर दबाऊगां कपड़ा साफ करुगां शादी हो जायेगी तो आपको इतना रुपया दूगां आदि आदि मैं कामकाली की मुस्कराहट का अर्थ भी समझ गया था और उसके दिमाग में चल रहे प्रश्न भी । जब मैं पूजा करता उसके पहले ही वह सारी व्यवस्था कर देता हवन करने जाता तो लकड़ी आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था । मैं उसकी दिमागी हरकत समझ रहा था । हवन साथ ही करने लगता मना तो करने का कोई सवाल ही नहीं था । वह अपनी माँ को ब्लैकमेल करने लगा पिता पर तो चलती नहीं थी। अब मैं ट्रेन से कटकर मर जाऊगाँ जहर खा लूगां आदि आदि मैं अपना हवन

जाप विधान तेज कर रहा था क्योकिं काल के साथ चला हूँ तो अनुभव भी अवश्य है। एक दिन वह मेरे साथ कहीं विवाह आदि में चला गया। गंगा पुल पर जाकर वह नाटक करने लगा कि आप पाठ करके उस लड़की से मेरी शादी नहीं करवायेगें तो मैं कूद कर जान दे दूगां। विवाह का रंग बदरंग हो गया उसको लेकर किसी तरह शहर आया। वहाँ आकर उसने नया नाटक फैला दिया वह गैस जलाकर मरने की धमकी देने लगा। मैं परेशान हो गया क्योकिं कुछ दिन से मैं और वह एक ही साथ रह रहे थे। मुझे डर था कि वह यदि ऐसा कर देगा तो मैं कलंकित हो जाऊगां मुझे ऐसा विश्वास है कि वह नहीं करता ऐसा पर डर.....। मैं उसको बहलाने के लिये कहता कि ये पूजा सामग्री लाओ वो लाओ पर पैसा उसके पास था ही नहीं क्योकिं जो भी पैसा उसके मिलता या झूठ बोलकर लाता या कपड़े आदि के लिये मांगता सब महबूबा की खातिरदारी में ही खत्म हो जाता। मुझे ही सब पैसा लगाना पड़ता। खैर उसका विवाह हो गया उसके शादी में मैं अनमने मन से शामिल हुआ। अब वह नई चाल चलने लगा जिसका आभास मुझे पहले ही हो गया था। मुझ पर नये नये आरोप प्रत्यारोप लगाने लगा वह खाते हैं मुझको नहीं खिलाते मेरी बेइज्जती करतें हैं। मुझको देखकर मुस्करातें हैं पता

नहीं क्या क्या । यह सब अपनी माँ से करता क्योकिं पिता तो समझदार थे सब जानते ही थे। सारी सेवा हवा हो गई थी अब वह दिन भर पत्नी के सेवा में लगा रहता । वह भी दूसरे के पैसो से। मैं भी मानसिक रुप से परेशान हो रहा था वह किसी भी प्रकार से यह चाहता था कि मैं उसकी कालोनी छोड़ दूँ ताकि वह अपनी नई पत्नी को लेकर रह सके और दोनों शहर का आनन्द ले सके वह भी बाप की कमाई से अपने क्या कमायेगा। वह मैंने भाग एक में ही लिख दिया है। संयोग से मैं घर आ गया और वह अपने घर। अपनी माँ को जाकर उसने यह कह दिया कि यदि मैं उसके यहाँ शहर में रहूगां तो वह अपने व पत्नी को मार देगा या जहर खिला देगा। वह इसका नया व अंन्तिम नाटक था । जब मैं शहर पहुचां तो उसके पिता ने यह मुझको बताया और उन्होंने यह भी कह दिया कि पुत्र ही नहीं रहेगा तो आप रहकर क्या करेंगे। मैं सारा सामान छोड़कर घर वापस आ गया। घर पर ही रहने लगा दो महीने बाद मेरा प्रमोशन हो गया मैं वही एक ऐसे विद्यालय पर चला गया जहाँ अध्यापक ही थे बच्चे नहीं । एक साल बाद शायद कोई जाकर मेरा सामान चौकी आदि लाया ऐसा मुझे याद है। मैं इस षड़यंत्र से इतना दुखी हुआ कि तंत्र जगत को सदा के लिये छोड़ दिया और गृहस्थ जीवन अपना लिया ।इस प्रकार मेरा तंत्र जीवन सदा

के लिये समाप्त हो गया ।

"भगवती कामकलाकाली के चरणों में कोटि कोटि प्रणाम"

समाप्त